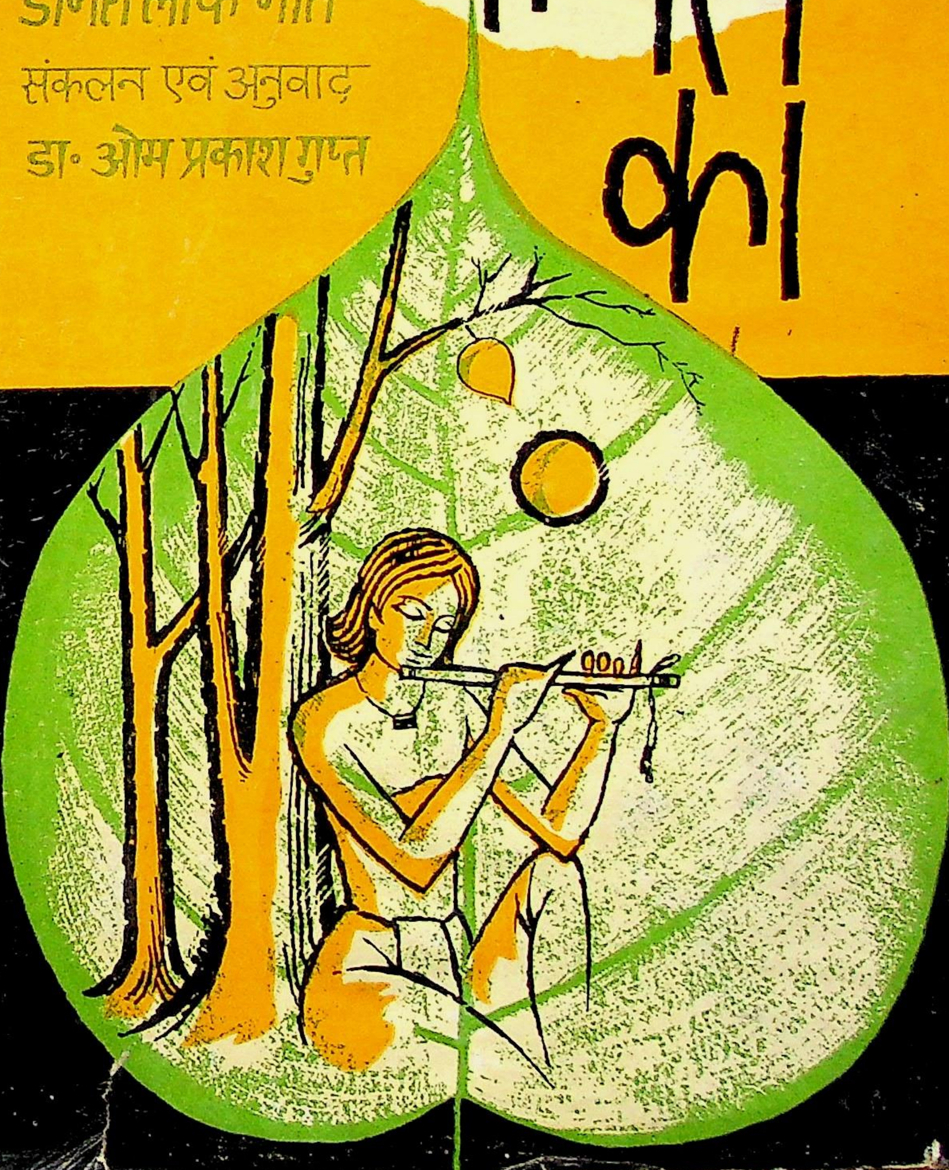
थिरके पत्ता पीपल का

डोगरी लोक गीत

संकलन एवं अनुवाद

डा॰ ओम प्रकाश गुप्त



थिरके पत्ता पीपल का

डोगरी लोकगीत

संकलन एवं अनुवाद :

डॉ० ओम प्रकाश गुप्त

ललितकला, संस्कृति तथा साहित्य अकादमी, जम्मू-कश्मीर, जम्मू ।

ललितकला, संस्कृति तथा
साहित्य अकादमी, जम्मू
द्वारा प्रकाशित

 मूल्य : नौ रुपये

प्रथम संस्करण : 1974

स्पेसएज़ प्रिंटर्ज़, महेशी गेट,
जम्मू द्वारा मुद्रित

THIRKE PATTA PIPAL KA
Verse Translation of Dogri Folk-Songs into Hindi.
By Dr. Om Parkash Gupta.

अनुक्रम

क्रम	प्रथम पंक्ति			पृष्ठ
प्राक्कथन				v
१	आम पके रावी पार	...	...	३
२	छबीले तेरे दांत गोरी	...	...	५
३	बागों लगवाऊं शहतूत	...	...	५
४	जाते असूज ओ	...	...	७
५	सगी बहनें दोनों	...	...	७
६	ओ सोने का मर्म सुनार जाने	...	...	९
७	कौन देस से आई है तू	...	...	९
८	चैत चम्बा ओ रोपा	...	...	११
९	ऊंचे पीपल कागा बोले	...	...	१३
१०	गहरे नालों की ज़िन्दगी मेरी	...	...	१५
११	भीतर बैठी गोरी ओ	...	...	१५
१२	सफेद तेरे दांत सोहें	...	...	१७
१३	ओ बादल बरसा रे लोगो	...	...	१७
१४	जल ओ जाय देस कंडी का बसना	...	...	१९
१५	पीली, हरी बदरिया री	...	...	१९
१६	दिन भर बरखा साजना ओ रात ठण्डी हवा		...	२१
१७	जीजे हमारे ने बाग लगवाया	...	...	२१
१८	मैं क्या करूं ननद मेरी	...	...	२३
१९	चैत महीने फूल खिले	...	...	२५
२०	फूल खिला, यह खिला रे खरैनी	...	...	२७

२१	जाड़े में मैं ठंड से मर जाती हूं	...	...	२९
२२	भरी दुपहरी जोहड़ सूखा	...	...	३१
२३	सावन में है मेंह बरसता	...	...	३१
२४	सावन की ओ बदरिया	...	...	३३
२५	यह बासमती किस ने बोई	...	...	३३
२६	हंस हंस पूछे रानी	...	...	३५
२७	पार - पार जाते सिपाही ओ	...	...	३५
२८	ऊंचे लम्बे सेमल ओ	...	...	३७
२९	ओ कंटीली कीकरी तेरी ठंडी ठंडी छांह		...	४१
३०	कुंएं पर ठाड़ी गोरी हे	...	...	४१
३१	भला है तू मंगलोटुआ हो	...	...	४३
३२	बुड्ढा सहेली, गले पड़ा बुड्ढा	...	...	४५
३३	बारह बरस बाद बालम घर आया		...	४७
३४	घिरी घटा घनघोर	...	...	४७
३५	जम्मू की कंडी में बरखा लगी है	...	...	४९
३६	गोरी चली जो मायके	...	...	५१
३७	ऊंचे टीले बनवाऊं बंगला	...	...	५१
३८	रे मैं गूंदां ललारिन गूंदल की	...	...	५३
३९	न रो नाजो रानी	...	...	५५
४०	पान जैसी पतली	...	...	५७
४१	पीपल तले गोरी क्यों खड़ी	...	...	५९
४२	रुक जाना ओ मित्तरा	...	...	५९
४३	नाम कटा घर आ जा	...	...	५९
४४	विश्वास नहीं कर यौवन का	...	...	६१
४५	सास के जन्मी लड़की	...	...	६३
४६	मत कर गोरी मैली अखियां	...	...	६५
४७	मेरा चांद	...	...	६९
४८	काले मृग, चरते वन-वन में	...	...	७५
४९	ढोल सिपाही ओ	...	...	७५
५०	बालू गढ़ाऊं, डब्बी में रखूं	...	...	७७
५१	यार मुझे घरवाली ने मारा	...	...	७९
५२	अन्दर से बेगम बाहिर निकली	...	...	८१
५३	संझा आई, दिवस गया ओ	...	...	८१

५४ अमरीका में लाम लगी है भारी ८५
५५ काली काली चुनरिया उड़ रही ८५
५६ कनकें पक गयीं वे ढोला ८७
:७ सतयुग में यूं कहते थे ८९
५८ ओ मिटे नहीं तकदीर ८९
५९ मीरां के पग झांझर सोहे ९१
६० राधिके, रस्ते में मदन गोपाल खड़े ... ९३
६१ यह जीवन दो दिन का महमान ९३
६२ मैं क्या कुछ भेंट चढ़ाऊं ९७
६३ माता के दरबार जोतें जगती हैं ९९
६४ मथुरा की यह बांकी ग्वालिन १०३
६५ बावल, एक मेरा कहना कीजिए १०७
६- सास बुलाया बन्ना अकेला १०७
६७ बरातियो खाने की तुम को क्यों पड़ी ... १०९
६८ घड़े पर थाली बाजे १०९
६९ आजा जीजा हमारे तू कारखाने १११
७० छन्द पास आ बोलिये १११
७१ गोरी के आंगन फूल जो फूला ११३
७२ हे ख्वाजे पीर ११७
७३ मकई की गोड़ाई ११७
७४ बारह बजके पंद्रह मिन्ट रे ११९
७५ रुल्ल की कूल १२३
७६ बार ढोल बादशाह की ११९
७७ बावा भैड़ की कारक १३५
७८ देश सुहाना १४१
७९ परिशिष्ट १४६

प्राक्कथन

लोकगीतों के माध्यम से लोकमानस की प्रवृत्तियां अभिव्यक्ति प्राप्त करती हैं। विषय, भाव, शैली आदि—विभिन्न दृष्टिकोणों से लोकगीतों की विविधता असीम होती है। रूप - भेद से लोकगीतों को गाथा एवं मुक्तक—दो वर्गों में रखा जाता है।

छन्दोबद्ध कहानी ही लोकगाथा है। डोगरी लोकगाथाओं को तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है :— १—कारक, २—बार, ३—सामान्य गाथा।

कारकें—देवी-देवताओं सम्बन्धी आख्यान हैं। वस्तुतः ये ऐसे महापुरुषों की गाथाएं हैं जो अपने अलौकिक कृत्यों के कारण लोकमानस में विशेष सन्मान के पात्र हुए। कारक धर्म के क्षेत्र की वस्तु है। इस लिए इसे धर्म-गाथा के साथ श्रेणी - बद्ध किया जा सकता है।

बारें—वीरों-सम्बन्धी गाथाएं हैं। प्रायः, 'बार' में शृङ्गार प्रधान रहता है। 'कारक' और 'बार' के अतिरिक्त सभी गाथाएं 'सामान्य गाथा' की कोटि में आती हैं।

पर्व, संस्कार; भाव, शैली आदि की दृष्टि से मुक्तक गीतों के भी अनेक विभेद किए जा सकते हैं।

भाख—गीत गाने की एक विशेष विधि है। गायक अपना एक हाथ कान पर रख कर, दूसरा भावानुसार लहराते हुए लंबी तान छेड़ता है। तान के आधार पर भाख लम्बी, मध्यम या छोटी कहलाती है तथा प्रेम, भक्ति, सामाजिक परिस्थिति—किसी भी विषय से सम्बन्धित हो सकनी है।

तरोड़क—भाख का ही एक रूप है। तोड़-तोड़ कर गाए जाने के कारण यह 'तरोड़क' कहलाता है।

बिसनपते—भक्ति, त्याग, सारांशतया, अध्यात्म सम्बन्धी छोटे छोटे भजनों को 'बिसनपत्ते' कहा जाता है।

झंझोटी—विविध विषयों से सम्बन्धित, पर्वतीय प्रदेश में गाये जाने वाले छोटे छोटे गीत 'झंझोटी' कहलाते हैं।

प्रस्तुत संकलन में कुछ पर्व एवं संस्कार सम्बन्धी गीत भी शामिल किये गये हैं। पुत्र-जन्म पर 'बिहाइयां', लड़के के विवाह पर 'घोड़ियां', लड़की के विवाह पर 'सुहाग', गाये जाते हैं। बरातियों को कन्या पक्ष की महिलाओं द्वारा कही गयी हास्य-व्यंग्य युक्त उक्तियां 'सिटनी' कहलाती हैं; वर द्वारा साली-सलहज एवं वधू की सहेलियों के अनुरोध पर 'छन्द' कहे जाते हैं।

एक भाषा की रचना का दूसरी भाषा में अनुवाद असंभव नहीं तो दुष्कर अवश्य है। कठिनाई, उस समय, और बढ़ जाती है जब छन्दोबद्ध कविता का अनुवाद छन्द में ही करना अभिप्रेत हो। लोकगीतों की भाषा स्वयं में साहित्यिक भाषा से अलग होती है। फिर एक लोकभाषा के गीतों को दूसरी साहित्यिक भाषा में प्रस्तुत करना समस्या को जटिलतर बना देता है। प्रस्तुत संकलन तैयार करते समय मेरे समक्ष निम्नलिखित आधार-बिन्दु रहे हैं :—

१ यथा सम्भव छन्द न बदला जाए,

२ अनुवाद की भाषा को दुरूह न होने दिया जाए,

३ यदि शब्दावली दोनों भाषाओं में समान है तो उसे न बदला जाए।

शब्द तो दोनों भाषाओं में अधिकांशत: समान मिल जाते हैं किन्तु भेदक तत्त्व बनता है—प्रत्यय; अतः छन्द टूट जाता है। प्राय: छन्द के मोह में भाव कहीं पीछे छूट जाने का भय बना रहता है। जहां लोकगीतकार ही छन्द के प्रति सजग न रहा हो, वहां अनुवाद में छन्द के प्रति ईमानदार रहा जाये या नहीं, यह प्रश्न भी काफी महत्वपूर्ण बन जाता है।

डोगरी - लोकगीतों का हिन्दी में छन्दोबद्ध अनुवाद प्रस्तुत करने की दिशा में यह प्रथम प्रयास है। यदि किसी अन्य विद्वान ने इस से पूर्व ऐसा किया होता तो उसकी कठिनाइयां मेरी सहायक बनतीं।

मैं यह कह सकता हूं कि छन्द और भाव अपरिवर्तित रखने का मैंने भरसक प्रयत्न किया है। जहां कहीं थोड़ा - बहुत परिवर्तन हुआ है या छन्द टूटा है, वहां मैंने अपने आपको मजबूर पाया है। गीतों के हिन्दी रूपों में कतिपय डोगरी-प्रयोग समाविष्ट करने का लोभ भी मैं छोड़ नहीं पाया हूं। 'न' और 'ना' जैसे प्रयोगों में मात्रा-लाभ के लिए मैंने अपने आप को स्वतंत्र मान लिया। इसी प्रकार कारक के अंत में मूल ई ध्वनि को सुरक्षित रखने के प्रयास में भी व्याकरण की अवहेलना हुई है। हिन्दी-रूपों में प्रयुक्त कुछ ऐसे डोगरी - शब्द जो हिन्दी - जगत में अजनबी माने जाएंगे, परिशिष्ट में दिए गये हैं।

गीतों के चयन एवं अनुवाद में सर्वश्री ज्योतीश्वर 'पथिक', निर्मल विनोदी, श्याम नारायण राय ने मेरी सहायता की है, अतएव मैं उन्हें धन्यवाद देता हूं। अकादमी के हिन्दी-विभाग के सम्पादक श्री रमेश मेहता ने भी काफी परिश्रम किया है; अन्यथा शायद, तीन मास की अल्प अवधि में यह पुस्तक तैयार न हो पाती।

लोकवार्त्ता की कक्षा में एम० ए० के अपने विद्यार्थियों से चर्चा भी मेरे लिए लाभकर रही; इसलिए मैं उन्हें भी धन्यवाद

क्यों न दूं ?

मेरे अग्रज डॉ० विद्यानाथ ने लगभग दो वर्ष पहले मुझे डोगरी लोक-गीतों को हिन्दी में प्रस्तुत करने की प्रेरणा दी थी। उनके प्रति आभार प्रकट न करना मेरी अकृतज्ञता होगी।

प्रस्तुत संकलन के लिए गीत, जम्मू - कश्मीर ललितकला, सस्कृति एवं साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित लोकगीत-संग्रहों से ही चुने गये हैं अत: उक्त संग्रहों के सम्पादक भी धन्यवाद के पात्र हैं।

—डॉ० ओमप्रकाश गुप्त

गीत

अम्ब पक्के राविया पार ते नेयी पेइयां डालियां ।
औंदे प्हाड़ी लोक मरोड़ी जंदे डालियां ।।

औंदे स्हाड़े बैरी ते लान डूंगियां बोलियां
औंदे स्हाड़े सज्जन ते भरी नेंदे झोलियां ।।

दाखां पक्कियां राविया पार ते नयी पेइयां डालियां ।
औंदे प्हाड़ी लोक मरोड़ी जंदे डालिआं ।।

औंदे स्हाड़े बैरी ते लान डूंगियां बोलियां ।
औंदें स्हाड़े सज्जन ते भरी नेंदे झोलियां ।।

निंबू पक्के राविया पार ते नेयी पेइयां डालियां ।
औंदे प्हाड़ी लोक मरोड़ी जंदे डालियां ।।

औंदे स्हाड़े बैंरी ते लान डूंगियां बोलियां ।
औंदे स्हाड़े सज्जन ते भरी नेंदे झोलियां ।।

●

आम पके रावी पार, झुक गयी डालियाँ।
आते पहाड़ी लोग, मरोड़ देते डालियां।।

आते हैं बैरी लोग, ओ मारते हैं बोलियां।
आते हैं सजन हमार, भर लेते झोलियां।।

दाखें पकीं रावी-पार, झुक गयीं डालियां।
आते पहाड़ी लोग, मरोड़ देते डालियां।।

आते हैं बैरी लोग, ओ मारते हैं बोलियां।
आते हैं सजन हमार, भर लेते झोलियां।।

नींबू पके रावी-पार, झुक गयो डालियां।
आते पहाड़ी लोग, मरोड़ देते डालियां।।

आते हैं बैरी लोग, ओ मारते हैं बोलियां।
आते हैं सजन हमार, भर लेते झोलियां।।

●

सोह्ने तेरे दंद गोरिए,
हस्सने बिना नईं रौह्न्दे ।

सोह्ने तेरे हत्थ गोरिए,
खेडने बिना नईं रौह्न्दे ।

सोह्ने तेरे पैर गोरिए,
चलने बिना नईं रौह्न्दे ।

सोह्ने तेरे नैन गोरिए,
तक्कने बाज नईं रौह्न्दे ।

●

अउं बागें लुआन्नीं शहतूत
अउं गुजरेटी तूँ रजपूत
जोड़ी अबज बनी ओ द्योरा !
द्योरा ओ मेरेया लोभिया ! !

अउं बागें लुआन्नीं अखरोट
चिट्टे दंद गुलाबी ओठ
बीड़ी मंगाई देयां ओ द्योरा !
द्योरा ओ मेरेया लोभिया ! !

अउं बागें लुआन्नीं आँ तुलसी
कोरा कागद लिखदा मुनसी
ख़त मंगाई देयां ओ द्योरा !
द्योरा ओ मेरेया लोभिया !!

अउं बागें लुआन्नी आँ पत्ते
मेरा द्योर गेया कलकत्ते
साड़ी मंगाई देयां ओ द्योरा !
द्योरा ओ मेरेया लोभिया ! !

●

छबीले तेरे दांत गोरी !
हंसे बिना नहीं रहते ।

छबीले तेरे हाथ गोरी !
खेले बिना नहीं रहते ।

छबीले तेरे पैर गोरी !
चले बिना नहीं रहते ।

छबीले तेरे नैन गोरी !
ताके बिना नहीं रहते ।

●

बागों लगवाऊं शहतूत,
मैं गुजरेटी तू रजपूत
जोड़ी अजब बनी देवर !
देवर ओ मेरे लालची देवर !!

बागों लगवाऊं अखरोट,
दूधिया दांत गुलाबी होंट
बीड़ी मंगवा दे ओ देवर !
देवर ओ मेरे लालची देवर !!

बागों लगवाऊं तुलसी,
लिखे कोरा कागज़ मुन्शी
कि खत मंगवा दे ओ देवर !
देवर ओ मेरे लालची देवर !!

बागों लगवाऊं पत्ते
गया देवर तो कलकत्ते
साड़ी मंगवा दे ओ देवर !
देवर ओ मेरे लालची देवर !!

●

जन्दे बो अस्सुआ
तूं चढ़दे ओ कत्तेआ
औंदे ओ जोबनां
बगदे ओ पानियां
तरदे ओ तारुआ
ओ सज्जना !

जे तुसें चली जानां
कदें नईं मलांदी
अंग ओ सज्जना !

जे भोली बरेसा
तुसें टुरी जाना
ते चलदी में तेरे
संग बो सज्जना !

●

दोऐ भैनां सक्कियां
नाजकू ते पड़ी ओ
नाजकू दा लक्क पतला
किक्करै दी फली ओ ।।

निक्का देर भूटे दिंदा
लोक जंदे सड़ी ओ ।
ढक्की चढ़दे सप्प लड़या
बिस्स जंदी चड़ी ओ ।।

कुन कर कारियां
ते कुन पुट्टै जड़ी ओ ।
कैंत करै कारियां
ते कैंत पुट्टै जड़ी ओ ।।

जाते असूज ओ
आते ओ कार्त्तिक
आते ओ यौवन
बहते ओ जल रे
तैरते तैराक ओ
ओ साजना !

जो तुझे होता जाना
कभी न मिलाती
अंग ओ साजना !

जो भोली वय में
तुझे होता जाना
चलती तुम्हारे मैं
संग ओ साजना !

●

सगी बहन दोनों
नाजकू औ' पड़ी रे।
कमर नाजकू की
कीकर की फली रे।।

झोंटे देता छोटा देवर
लोग जाते जल रे।
ढक्की में सांप काटे
विष जाये चढ़ रे।।

कौन उपचार करे
लाये कौन जड़ी रे ?
कंत उपचार करे
कंत लाए जड़ी रे।।

डंगी खादा जान मेरी
अउं गेइयां मरी श्रो ।
दोऐ भैनां सक्कियां
नाजकू ते पड़ी श्रो ।।

●

श्रो सुन्ने दी सार सुनयार जानैं ।
श्रो लोहे दी सार लोहार जानैं ।।

जरो मिट्टी दी सार घ्म्यार जानैं ।
मड़ो राम दियां कीतियां राम जानैं ।।

श्रो भाई दियां कीतियां भाई जानैं ।
पर तेरियां कीतियां कुन ज़ानैं ।।

श्रज्ज दिलै दियां सारां कुन जानैं ।
श्रो डूंगियां पीड़ां कुन जानैं ।।

श्रो डूंगियां रम्जां कुन जानैं ।
श्रो दिल दियां रम्जां कुन जानैं ।।

ए डूंगियां पीड़ां रोह्ल जानैं ।
श्रो सुन्ने दी सार सुनयार जानैं ।।

●

कोके देसा दा तो श्राई एं,
ते कोके देसा गी जाना ?
रांझे दी ए श्रो पतले !

मुक्ख त तेरा त्रिम्बें त्रिम्बें घड़ेया,
दंदै नैं बन्नी लेइऐ मौज ।
रांझे दी ए श्रो पतले !

काट खाया जान मेरी
मैं मर गयी रे।
सगी बहनें दोनों
नाजकू औ' पड़ी रे।।

●

ओ सोने का मर्म सुनार जाने।
ओ लोहे का मर्म लुहार जाने।।

भई ! मिट्टी का मर्म कुम्हार जाने।
अरे राम की करनी राम जाने।।

ओ भाई की करनी भाई जाने।
पर तू ने जो की हैं कौन जाने।।

आज मर्म हृदय का कौन जाने।
ओ गहरी पीड़ाएं कौन जाने।।

ओ गहरी व्यथाएं कौन जाने।
ओ दिल की व्यथाएं कौन जाने।।

गहरी ये पीड़ाएं यार जाने।
ओ सोने की सार सुनार जाने।।

●

कौन देस से आई है तू,
कौन देस को है जाना ?
रांझे की पतली सजनी ओ !

मुख तो तेरा त्रिम्ब - तराशा,
दांतों ने बांधी है मौज।
रांझे की पतली सजनी ओ !

नक्क ते तेरा त्रिम्बें त्रिम्बें घड़ेया,
लौंगै नै बन्नी लेइऐ मौज ॥
राझे दी ए स्रो पतले !

बीनीं जे तेरी त्रिम्बें त्रिम्बें घड़िऐ,
चूड़े नै बन्नी लेइऐ मौज।
रांझे दी ए स्रो पतले !

पैर जे तेरे त्रिम्बें त्रिम्बें घड़े न,
कड़िएं नै बन्नी लेइऐ मौज।
रांझे दी ए स्रो पतले !

प्हाड़ें देसा दा तूं स्राइएं,
ते चिक्के देसै गी तो जानां।
रांझे दी ए स्रो पतले !

●

चैत्तर चंबा स्रो लाया
स्राङन मरुस्रा स्रो लाया।
तेरे सोह्
मरुस्रा स्रो लाया ॥

चंबा सुक्की बो गया।
मरुस्रा कल्माई बो गया ॥

डाढी ब्हा पूरे दी।
स्रो खूनी ब्हा पूरे दी ॥

नैनें दा दिन्नियां पानी।
खूनी नैनें दा पानी ॥

चंबा उस्सरी स्राया।
स्रो मरुस्रा उस्सरी स्राया ॥

●

नाक तुम्हारा त्रिम्ब - तराशा,
लौंग ने बांधी है मौज ।
रांझे की पतली सजनी ओ !

तेरी कलाई त्रिम्ब - तराशी
चूड़े ने बांधी है मौज ।
रांझे की पतली सजनी ओ !

पैर तो तेरे त्रिम्ब - तराशे,
कड़ियों ने बांधी है मौज ।
रांझे की पतली सजनी ओ !

देस पहाड़ से आई है री,
निचले देस तुझे जाना ।
रांझे की पतली सजनी ओ !

●

चैत चम्बा ओ रोपा
आंगन मरुआ ओ रोपा ।
कसम से
मरुआ ओ रोपा ॥

गया है सूख जी चंबा ।
अजी कुम्हला गया मरुआ ॥

बड़ी निर्मम है पुर्वाई ।
बड़ी खूनी है पुर्वाई ॥

नयन का देती हूं पानी ।
कि खूनी नयनों का पानी ।

हरा हो चंबा मुस्काया ।
हरा हो मरुआ मुस्काया ॥

●

उच्चै पिप्पल का जे बोलै
देस पिया दे जायां,
ओ सुन कालेया कामाँ
बे सुन कालेया कामाँ
पिया गी अर्ज सुनानी.........।
ओ भला जी.........जी ओ ।।

ए संदेसड़ा पिया गी देना—
तुद्द की दिला बसारी ?
ओ जोबन देया चोरा
ओ लामें देया चोरा,
में तेरे बजोगें मारी......।
ओ भला जी.........जी ओ ।।

बारें बरें ढोली घर आया
हत्थ छत्तरी ते रमाल
ए स्हाड़ी दिलै दी जान..... ए
लक्क पेयीं दी तलवार......।
ओ भला जी.........जी ओ ।।

रात पवै तां छेज़ बछामाँ
मखमल ते दरयाइयाँ,
देन ममारख सेइयाँ,
ते देन ममारख सेइयाँ,
छेज पर फुल्ल खलारे......।
ओ भला जी.........जी ओ ।।

ऊंचे पीपल कागा बोले
देस पिया के जाना रे
सुन ओ काले तू कौए,
ओ सुन, काले तू कौए,
पिया को अर्ज़ सुनाना रे......।
ओ भला जी.........जी ओ ॥

यह संदेशा देना पिया को
क्यों तूने दिल से बिसारा रे
मेरे यौवन के चोर
मेरे फेरों के चार
मुझे तेरे विरह ने मारा रे......।
ओ भला जी.........जी ओ ॥

बारह बरस बाद आया सजन घर
हाथ में छतरी, रुमाल रे
यह दिल की हमारी जान रे
कमर में है तलवार रे......।
ओ भला जी.........जी ओ ॥

रात घिरे तो सेज बिछाऊं
मखमल औ' दरियाइयां
देवें वधाई सहेलियाँ
री देवें वधाई सहेलियां,
सेज पे फूल बिछाए......।
ओ भला जी.........जी ओ ॥

●

डुंग्गड़ैं नाल दी जिन्दड़ी मेरी
गलै लग्गां रोई रोई ।

रोई रोई मेरे नैन थक्की गे
अत्थरुएं गोद भरोई ।

लट्ठे दी चादरा दाग लग्गे दा
दाग निं जंदा धोई ।

●

अन्दर बैठी दिए गोरिए, भित्तें दे सौंगलू गुआड़,
दरदाँ गुआनिड़एँ ।

कियां गुआड़ाँ भित्तें दे सौंगलू, गोदा सुत्ता नंदलाल,
दरदाँ गुआड़निए ।

कन्तै दी नौकरी झिक्का लोआन्नियां, देरै दी लोआं उच्चे प्हाड़;
दरदाँ गुआड़निएँ ।

कंतै जे अपने गी चिट्ठियां पान्नियां, देरै गी सुट्टी लम्मी तार;
दरदाँ गुआड़निएँ ।

बारें जे बरें देर घरै गी आया, कंत निं आया ब्हार;
दरदाँ गुआड़निएँ ।

कदें कदें देर घरै गी आया मंगदा निंबुएं दा चार;
दरदाँ गुआड़निएँ ।

निंबुएँ दा चार इत्थें थोंदा नेईंऐ, जन्नियाँ हट्ट बजार;
दरदाँ गुआड़निएँ ।

●

गहरे नालों की जिन्दगी मेरी
कंठ लगूं मैं रो रो कर।

रो रो कर मेरे नैन थके हैं
गोद भरी जल बह बह कर।

लट्ठे की चादर दाग़ लगा है
दाग न छूटे धो धो कर।

●

भीतर बैठी गोरी ओ, उठ, तू सांकल खोल;
दर्द जगाती हो।

कैसे खोलूं सांकलें, गोदी सोया नन्दलाल;
दर्द जगाती हो।

नीचे लगवाऊं कंत की नौकरी, देवर की ऊंचे पहाड़;
दर्द जगाती हो।

कंत को अपने पाती भेजूं, देवर को लम्बी तार;
दर्द जगाती हो।

बारह बरस बाद देवर जो आया, कंत न आया द्वार;
दर्द जगाती हो।

इतने दिनों बाद देवर घर आया, नींबू का मांगे अचार;
दर्द जगाती हो।

नींबू यहां तो मिलते नहीं रे, जाती हूं हाट - बाजार;
दर्द जगाती हो।

●

चिट्टे तेरे दंद सोब्बन
मस्सिएँ दे नाल; परदेसिया !

अक्खीं तेरियाँ गैह्रियाँ
सोब्बन कजलै नाल; परदेसिया !

नीली तेरी घोड़ी सोब्बै
काठिऐ दे नाल ; परदेसिया !

लक्क तेरै पतले सोब्बै
ढाल ते तलोआर ; परदेसिया !

साफा तेरा केसरी सोब्बै
बुम्बलाँ दे नाल ; परदेसिया !

●

ओ बद्दल बरेया बे लोका ।
ते बूँदां पेइयाँ बे लोका ।।

ते ढोल गोआचा बे लोका !
ते तुप्पनीं गलियाँ बे लोका ।।

ते छेज बछानीं बे लोका ।
ते कस्सनीं तनियाँ बे लोका ।।

ते ढोल न्याणाँ बे लोका ।
ओ करदा अड़ियाँ बे लोका ।।

●

सफेद तेरे दांत सोहें
मिस्सिग्रों के साथ; परदेसिया !

नयन गहरे सोहें
कज्जरे के साथ; परदेसिया !

नीली नीली घोड़ी तेरी
सोहे काठी साथ; परदेसिया !

क्षीण कटि पे सोहे
ढाल ग्रौर तलवार; परदेसिया !

रे पगड़ी केसरिया
सोहे कलगी साथ; परदेसिया !

●

ग्रो बादल बरसा रे लोगो ।
झरी हैं बूंदें रे लोगो ।।

खो गया साजन रे लोगो ।
कि ढूंढूं गलियों में लोगो ।।

सेज बिछाऊं रे लोगो ।
कसूं मैं डोरियां लोगो ।।

बहुत भोला सजन लोगो ।
बड़ा ज़िद्दी सजन लोगो ।।

●

जली बो जायां कण्डी देग्रा बस्सना ।।

ग्रद्धी रातिया चक्की दा घस्सना ।
भर दोपहरिया पानिएं गी नस्सना ।।

कण्डी बो देसैं दे बट्ट बटैंले ।
घस्सी बो जंदे न गोरी दे पैर ग्रो पतले ।।

कण्डी बो देसैं दे पानी बो तत्तले ।
जली बो जंदे गोरी दे होठ बो पतले ।।

कण्डी बो देसैं दे ग्रम्ब ग्रो मिठड़े ।
घस्सी बो जंदे न गोरी दे दंद ग्रो चिटड़े ।।

●

सैंलिए पीलिए बदलिए,
बरी जायां ग्रज्जै केड़ी रात ।

बिन्दले जैंसे फूहे पौंदे,
कज्जल बो जैंसी फुहार ।

मतियां सिज्जियां लेफ तलाइयां
बहुता जे सिज्जै गुलनार ।

कुत्थें सुखां में लेफ तलाइयां,
कुत्थें सुखामां गुलनार ।

मैंह लें जे सुखां में लेफ तलाइयां
बागें सुखां गुलनार ।

उट्ठेयां नाजो सुत्तिए,
भित्तें दे जन्दरे गुहाड़ ।

ए लौ कुंजियां ग्रापूं खोलो,
दिलै दियां घुण्डियां बसार ।

●

जल ओ जाय देस कण्डी का बसना ।।

आधी रात तक चक्की का घिसना ।
जलती दुपहर में पानी को दौड़ना ।।

कण्डी ओ देस के पत्थर औ' कंकर ।
घिसते हैं गोरी के पांव सुकोमल ।।

कण्डी ओ देस के पानी उबलते ।
जलते हैं गोरी के होंठ ओ पतले ।।

कण्डी ओ देस के आम हैं मीठे ।
घिसते हैं गोरी के दांत ओ उजले ।।

पीली, हरी बदरिया री,
तू बरस आज की रात ।

बुन्दले जैसे फूहे गिरते,
ओ काजल जैसी फुहार ।

भीगे बहुत ही तोशक-गदेले,
भीगे बहुत गुलनार ।

सुखाऊं कहां मैं तोशक-गदेले,
कहां सुखाऊं गुलनार ।

सुखाऊं महल में तोशक गदेले,
बागों में गुलनार ।

नाजो री सोई जाग तू,
खोल, ताले और किवार ।

तालियां ले स्वयं खोलो,
दिल की गांठ बिसार ।

दिनें बरैह बरखा ते रात्तीं ठण्डी बो व्हा
ग्रो लोभिया
रात्तीं ठण्डी बो व्हा ।

उठ नागा सुत्तेया गोरिया गी कलियां चुना
लो लोभिया
गोरिया गी कलियां चुना ।

चुनी चुनी सेजा पान्नी, सेज सुन्नी घर ग्रा
ग्रो परदेसिया
सेज सुन्नी घर ग्रा ।

ढोली सा न्यानाँ तुद लेया गल्लें बो ला
ग्रो जोगनें
लेया गल्लें बो ला ।

गल्लें लाने बालिये, तेरा ग्रौतरनामा जा
ग्रो जोगनें
तेरा ग्रौतरनामा जा ।

ग्रक्क ते धतूरा, भङ तेरै जम्म बो जा
ग्रो जोगनें
तेरे जम्म बो जा ।

●

जीजे स्हाड़े नै बाग लुग्राया
साली दे पचोग्राड़ै
नदाने
साली दे पचोग्राड़ै

सुन साली जी तुस इक बारी ग्राग्रो
सैल करने दे व्हान्ने

सुन जीजा जी में कदी बी ना ग्रामां
लोक मारदे तान्नें !

दिन भर बरखा साजना ओ, रात ठण्डी हवा
ओ लोभी,
रात ठण्डी हवा।

जाग सोए नाग तू कलियां मुझे चुनवा
ओ लोभी,
कलियां मुझे चुनवा।

चुन चुन सजाऊं सेज, सूनी सेज है, घर आ
ओ सूनी
सेज है घर आ।

था अजाना ढोल बातों से लिया भरमा
ओ जोगिन
क्यों लिया भरमा ?

कुटिल बतरौही तेरा सब कुछ हो जाय तबाह
ओ जोगिन
सब कुछ हो जाय तबाह।

तेरे खेत में हो आक या फिर भांग धतूरा
ओ जोगिन
भांग धतूरा।

●

जीजे हमारे ने बाग लगवाया
साली के पिछवाड़े;
नादान री !
साली के पिछवाड़े।

सुन साली जी आप एक बार आओ।
सैर के ओ बहाने।

सुन जीजा जी मैं कभी भी न आऊं
लोग देते हैं ताने।

जीजे स्हाड़े नैं खूह् आ लोआया
साली दे पचोआड़ै
सुन साली जी तुस इक बारी आओ
पानी भरने दे ब्हान्ने ।

सुन जीजा जी मैं कदीं बी ना आमां
लोक मारदे तान्ने !

जीजे स्हाड़े नै मैह्ल छताया
साली दे पचोआड़ै
सुन साली जी तुस इक बारी आओ
देखने दे ओ ब्हान्ने ।

सुन जीजा जी मैं कदीं बी ना आमां
लोक मारदे तान्ने !

जीजे स्हाड़े नै पलंग डोआया
साली दे पचोआड़ै
सुन साली जी तुस इक बारी आओ
सौने दे ओ ब्हान्ने ।

सुन जीजा जी मैं कदीं बी ना आमां
लोक मारदे तान्ने !

●

में के करां ननानें जोबन होड़या नि रौंदा ।।
कदें रावी दै कंडे, कदें दरया दे फेरे—
बगुला बन बन बौन्दा;
में के करां ननानें जोबन होड़या नि रौंदा ।।

कदें कलिएं दे उप्पर, कदें फुल्लें दे अन्दर—
भौंरा बन बन बौंदा;
में के करां ननानें जोबन होड़या नि रौंदा ।।

जीजे हमारे ने कुंग्रा खुदवाया
साली के पिछवाड़े
सुन साली जी ग्राप इक बार ग्राग्रो
पानी के ग्रो बहाने ।

सुन जीजा जी मैं कभी भी न ग्राऊं
लोग देते हैं ताने !

जीजे हमारे ने महल बनवाया
साली के पिछवाड़े
सुन साली जी ग्राप इक बार ग्राग्रो
देखने के बहाने ।

सुन जीजा जी मैं कभी भी न ग्राऊं
लोग देते हैं ताने !

जीजे हमारे ने पलंग बिछवाया
साली के पिछवाड़े
सुन साली जी ग्राप इक बार ग्राग्रो
सोने के ग्रो बहाने ।

सुन जीजा जी मैं कभी भी न ग्राऊं
लोग देते हैं तानें !

●

मैं क्या करूं ननद मेरी, यौवन रोके न रुक पाए ।।
कभी रावी के तीर पर, कभी दरया के फेर पर—
बगुला बन बन धाए;
मैं क्या करूं ननद मेरी, यौवन रोके न रुक पाए ।।

कभी यह कलियों के ऊपर, कभी यह फूलों के भीतर—
भंवरा बन बन जाए;
मैं क्या करूं ननद मेरी, यौवन रोके न रुक पाए ।।

कदें इत पासै औन्दा, कदे उत पासै जंदा,
नैन भरी भरी रोंदा,
में के करां ननानें जोबन होड़या नि रौंदा ॥

कदे बैठी दी हस्सां, कदें सुत्ती दी नस्सां,
मार उडारी जन्दा;
में के करां ननानें जोबन होड़या नि रौंदा ॥

●

चैत्तर म्हीनै फुल्ल खिड़े
स्हाड़े किल्लिया कल्माई गे हार अड़िए
स्हाड़ा पाने वाला रांझा दूर अड़िए !

चैत्तर म्हीनें कमांद पीड़े
स्हाड़े गन्ने कल्माई गे बिच्च बेल्लै
स्हाड़ा चूपने आला रांझा दूर अड़िए !

चैत्तर म्हीनै तूत पक्के
स्हाड़े तूत कल्माई गे डालियें पर
स्हाड़ा खाने आला रांझा दूर अड़िए !

●

कभी यह इस ओर आए, कभी यह उस ओर जाए,
नयना भर भर रोए
मैं क्या करूं ननद मेरी, यौवन रोके न रुक पाए ॥

कभी बैठी हुई हंस दूं, कभी सोई हुई भागूं,
भर उड़ान, उड़ जाए;
मैं क्या करूं ननद मेरी, यौवन रोके न रुक पाये ॥

●

चेत महीने फूल खिले
मेरे खूंटी पे कुम्हलाए हार सखी
रांझा, पहने जो, हम से दूर सखी !

चेत महीने गन्ने पेरे
मेरे खेतों में सूख गये गन्ने सखी
रांझा, चूसे जो, हम से दूर सखी !

चेत महीने तूत पके
मेरे डाली पे कुम्हलाए तूत सखी
रांझा, खाए जो, हम से दूर सखी !

●

फुल्ल खिड़या, फुल्क खिड़या खरैनी
जेड़ियां गल्लां तूं भालनां
उनें गल्लें पत्त नईं रैह्नी
भुल्ली ओ भौंरा तेरे साथ
प्रभू जी भुल्ल रहियां।

फुल्ल खिड़या, फुल्ल खिड़या धम्मन
जेड़ियां गल्लां तूं भालनां
उनें गल्लें पत्त नईं रैह्नी
भुल्ली ओ भौंरा तेरे साथ
प्रभू जी भुल्ल रहियां।

पापी लोक प्हाड़ दे पत्थर जिनां दे चित्त
अंग मलांदे कदें कदें
पर नैन मलांदे नित्त
भुल्ली ओ भौंरा तेरे साथ
प्रभू जी भुल्ल रेहियां।

●

बिच स्यालै अऊं सीतें मरी जन्नियां
स्हाड़ी गली बल आ
ओ बंजारेया !
स्हाड़ी गली बल आ !!

होरनें ते लेई ऐ बंगड़ी बंगूड़ी
में लेया ऐ चूड़ा चढ़ा
जान्नें मेरिये !
में लेया ऐ चूड़ा चढ़ा।।

फूल खिला, यह खिला रे खरैनी
जो बातें तू सोचता
इन बातों से पत न रहेगी
भूली ओ भंवरे तेरे साथ
प्रभु जी, भूल रही।

फूल खिला, यह खिला फूल धम्मन
जो बातें तू सोचता
इन बातों से पत न रहेगी
भूली भंवरे तेरे साथ
प्रभु जी भूल रही!

पापी लोग पहाड़ के, पत्थर जिनके चित्त
अंग मिलाते कभी कभी
पर नैन मिलाते नित्य
भूली ओ भंवरे तेरे साथ
प्रभु जी, भूल रही!

●

जाड़े में मैं ठण्ड से मर जाती हूं,
मेरी गली में आ,
बनजारे!
मेरी गली में आ!!

औरों ने ली सखि, एक-दो चूड़ी
लिया मैंने तो चूड़ा चढ़ा
ओ जान मेरी!
लिया मैंने तो चूड़ा चढ़ा!!

बेही पसारैं चरखा डाह्नीं आं
कत्तनीं चूड़े दे चा
ओ जान्नें !
कत्तनीं चूड़े दे चा !!

बाह्रा दा आया ह्सदा खेडदा
माए नै दित्ता बह्का
ओ जान्नें !
माए नै दित्ता बह्का !!

अन्दरा आया जलया बलया
लेया ऐ चूड़ा भना
ओ जान्नें !
लेया ऐ चूड़ा भना !!

चुन चुन वंगां में झोली बिच पान्नी आं
दस्सो मेरे प्योकिएं दा राह्
ओ जान्नें !
दस्सो मेरे प्योकिएं दा राह् !!

लेइए आटा मुंडा भैन बेड़े जंदा ऐ
भैन मेरियां रोटियां पका
ओ जान्नें !
भैन मेरियां रोटियां पका !!

इक दिन बीरा दो दिन बीरा
त्रीए दिन भाबी गी लेया
ओ जान्नें !
त्रीए दिन भाबी गी लेया !!

पंज रपे मोआ पल्लेया दा दिंदा
नमां बो लेया चढ़ा
ओ जान्नें !
नमां बो लेया चढ़ा !!

●

बैठ दालान में चर्खा जो कातूं
चूड़ा दिखाने का चाव
ओ जान मेरी !
चूड़ा दिखाने का चाव !!

बाहिर से आया वह हंसता हंसाता
मां ने दिया वहका
ओ जान मेरी !
मां ने दिया बहका !!

अन्दर से जल-भुन आया जो बाहिर
बैठी मैं चूड़ा तुड़ा
ओ जान मेरी
बैठी मैं चूड़ा तुड़ा

चुन चुन चूड़ियां झोली में डालूं
दिखाओ मेरे मायके की राह
ओ जान मेरी !
दिखाओ मेरे मायके की राह !!

आटा लिये वह जाता बहिन के
बहिन मेरी रोटियां पका
ओ जान मेरी !
बहिन मेरी रोटियां पका !!

एक दिन भैया, दो दिन भैया,
तीजे दिवस भाभी ला
ओ जान मेरी !
तीजे दिवस भाभी ला !!

पांच रुपये अपनी जेब से है देता
चूड़ा नया चढ़वा
ओ जान मेरी !
चूड़ा नया चढ़वा !!

●

भर दोपहरी छप्पड़ी सुक्की
सुक्की गेई मरुए कयारी

सूई सोलाई ओ
मरुआ बो गुड्डेया
नैनां दा डोलनीं पानी

चल मियां रांझेया
खेती ओ बीजिए
सांझड़ी ओ करगे
पोगाली।

●

सौन म्हीनै मींह बरैंहन्दा
तविया पौंदे हाड़ सज्जनां !
ओ तवी देया तारुआ
सानूं टपायां पार सज्जनां !!

अज्जै दी रातीं रमेयां नगरी स्हाड़िया
कल्ल टपागे पार गोरिए
ओ मेरिए जोड़िए !
कल्ल टपागे पार गोरिए !!

जुल्फां कटान्नियां, रस्सा बनान्नियां
बाह्में दे लान्नी आं बांस सज्जनां !
ओ तवी देया तारुआ
बाह्में दे लान्नी आं बांस सज्जनां ।।

छाती चरान्नियां, बेड़ी बनान्नियां
झट पुज्जी जन्नियां पार सज्जनां ।
ओ तवी देया तारुआ
झट पुज्जी जन्नियां पार सज्जनां ।।

●

भरी दुपहरी जोहड़ सूखा
सूख गयी मरुग्रा-क्यारी

सूई सलाई से - ग्रो—
मरुए को गोढ़ा
नैनों का देती हूं पानी

चल रे मियां रांझे
खेती ग्रो बीजें
मिल के करेंगे
सांझेदारी ।

सावन में है मेंह बरसता
ग्रायी तवी में बाढ़ सजना !
ग्रो तारू तवी के
पहुंचा दे ग्रो पार सजना ! !

ग्राज रैन रहो नगरी हमारी
कल पहुंचाएंगे पार गोरी ग्रो !
मेरी जोड़ी ग्रो ।
कल पहुंचाएंगे पार गोरी ग्रो ! !

जुल्फें कटाऊं, रस्सा बनाऊं
बाहें बनाऊं बांस सजना !
ग्रो तारू तवी के !
बाहें बनाऊं बांस सजना ! !

छाती चिराऊं, बेड़ी बनाऊं
झट पट पहुंचूं पार सजना !
ग्रो तारू तवी के !
झट पट पहुंचूं पार सजना !!

सौन म्हीने दिए बदलिए !
कैत लाइयां नि फुहारां,
ओ कैत लाइयां नि फ़ुहारां ?

सज्जनें बाझुं गूंडी लग्गनीं,
जम्मुआं पाइया तारां;
ओ जम्मुआ पाइयां तारां।

सज्जनें बाझुं दिल नेहा लगदा
जम्मुआ पाइयां तारां;
ओ जम्मुआ पाइयां तारां।

मिलनां तोह् तां मिल सज्जनां,
मेरी जान चली संसारा;
ओ मेरी जान चली संसारा।

अद्धी रातीं चन्न घरोंदे,
सज्जनें दित्ता आला;
ओ सज्जनें दित्ता आला।

सुत्ती दी आउं खड़ी-खड़ोती,
चन्न चढ़ेया पुन्नेयां बाला;
ओ चन्न चढ़ेया पुन्नेयां बाला।

ए बासमती कुन्न राही,
बल्लै बल्लै कुन्न राही।
जियां गास फिरै मुरगाई,
बासमती कुन्न राही।
ए डार हैंसें दा जियां
अल्हड़ फसी गे फाही।
जियां गास फिर मुरगाई,
ए बासमती कुन्न राही।

सावन की ओ बदरिया,
क्यों लगाईं री फुहारें,
ओ लगाईं क्यों फुहारें ?

साजन बिन तू अच्छी लगे ना,
जम्मू भेजीं तारें;
ओ जम्मू भेजीं तारें।

साजन बिन तो दिल ना लागे
जम्मू भेजीं तारें;
ओ जम्मू भेजीं तारें।

मिलना है तो मिल जा साजन,
जान चली दुनियां से;
मेरी जान चली दुनियां से।

रात आधी, चांद छुपते,
आय बलम पुकारा;
ओ आय सजन पुकारा।

नींद से मैं चौंक देखूं—
चांद पूनम वाला;
ओ मेरा चांद पूनम वाला।

●

यह बासमती किसने बोई,
ओ वाह वाह किसने बोई।
ज्यों उड़े गगन में मुरगाबी,
यह बासमती किसने बोई।

हंसों का दल यह तो मानो,
फंस गये यहां अल्हड़ कोई।
ज्यों उड़े गगन में मुरगाबी,
यह बासमती किसने बोई।

●

हस्सी हस्सी पुच्छै रानी राजे कोला बात बो,
कुत्थैं गुजारी राजा कल्लै बाली रात बो ?
बोलो नरैणा मेरे सिरी भगवान ।।

बिन्द्राबनैं बिच सेइएं दी रास बो
उत्थैं गुजारी रानी कल्लै बाली रात बो
बोला नरैणा मेरे सिरी भगवान ।।

हस्सी हस्सी पुच्छै रानी राजे कोला बात बो,
कुसनै रंगे तेरे कपड़े लाल बो ?
बोलो नरैणा मेरे सिरी भगवान ।।

फौगन म्हीनै रानी होलियें दी पुन्नेयां,
गोपिएं रंगे रानी कपड़े लाल बो ।
बोलो नरैणा मेरे सिरी भगवान ।।

●

पारें पारें जन्देया सपाहिया श्रो
लेई के सनेढ़ा जायां लोभिया
तेरे सोह्
लेई के सनेढ़ा जायां लोभिया !

लेई के सनेढ़ा ढोलिया गी देना
कनक पक्की घर श्रायां लोभिया
तेरे सोह्
कनक पक्की घर श्रायां लोभिया !

पक्की पक्की जायां बड्डी लोभिया
सैलिया गी देई जायां झल्ल लोभिया
तेरे सोह्
सैलिया गी देई जायां झल्ल लोभिया !

हंस हंस पूछे रानी राजे से बात रे—
गुज़री कहां राजा, कल वाली रात रे ?
बोलो नारायण मेरे श्री भगवान ।।

वृन्दावन में सखियों की रास रे
बीती वहीं रानी कल वाली रात रे ।
बोलो नारायण मेरे श्री भगवान ।।

हंस हस पूछे रानी राजे से बात रे—
किसने रंगे तेरे कपड़े लाल रे ?
बोलो नारायण मेरे श्री भगवान ।।

होली की पूनम रानी फागुन का मास रे
रंग दिए गोपियों ने कपड़े ये लाल रे ।
बोलो नारायण मेरे श्री भगवान ।

●

पार-पार जाते सिपाही ओ
ले संदेशा जाना ओ लोभी
कसम तेरी,
ले के संदेशा जाना ओ लोभी !

ले के संदेशा प्रीतम को देना
कनक पकी घर आना ओ लोभी
कसम तेरी,
कनक पकी घर आना ओ लोभी !

पक जो गयी, लेना काट ओ लोभी
रहे जो हरी, देना बाड़ ओ लोभी
कसम तेरी,
रही जो हरी, देना बाड़ ओ लोभी ।

लेई के सनेढ़ा ढोलिया गी देना
अम्ब पक्के घर आयां लोभिया
तेरे सोह्
अम्ब पक्के घर आयां लोभिया ।

●

उच्चेया
लम्मेया
सिम्बला ओ !
चोटी झुल्लै
अद्ध गास

नईं ऐ फलें च
स्वाद तेरे कोई,
नईं ऐ फुल्लें बिच
बास

अहें कैन्त गया दा
नौकरी
कदूं मुक्कनी
ए लम्मी
आस

●

ले के संदेश यह प्रीतम को देना
आम पके घर आना ओ लोभी
कसम तेरी,
आम पके घर आना ओ लोभी !

●

ऊंचे ओ
लम्बे ओ
सेमल ओ !
चोटी झूले ओ
बीच आकाश

नहीं है फलों में
स्वाद तेरे कोई
नहीं है सुमन में
बास

कहे—कन्त गया है
नौकरी
निःशेष होगी
कब लम्बी
आस

●

झंझोटियाँ

किकरिये कण्ड्यारिये तेरी ठण्डी ठण्डी छां
मैं बारी
तेरी ठण्डी ठण्डी छां

लंग लंग जन्दे दो जने
जुल्फां गले बिच खुल्लियां
नैनां रेह् शरमा

जुल्फें गी रखयो संभाल के
फर फर झुलदी व्हा
नैनां रखयो छपा

घर बल आए दो जने
अतरें छोड़ी बासना
मन भरदा ठण्डी आह्

कदमें गी रखयो संभाल के
अतरें दी ढकयो बासना
छाती गी धीर बंधा

मैं बारी
तेरी ठण्डी ठण्डी छां
किकरिये कण्ड्यारिये तेरी ठंडी ठंडी छां

●

खुऐ पर खड़ोतिए गोरिए
तेरे सिरै पर सालू
हल्ला बो करै
हल्ला झुल्ला बो करै
जिस ललारुए सालू जे रंगेया
उस्से दा परमेस्सर भला बो करै ।
भला बुरा बो करै ।।

ओ कंटीली कीकरी तेरी ठंडी ठंडी छांह
मैं वारी
तेरी ठंडी ठंडी छांह

जा रहे दो यार हैं
ज़ुल्फ़ें गले में खुल पड़ीं
नयना रहे शर्मा

ज़ुल्फ़ों को रखियो संभाल के
फर फर चले रे हवा
नयन रखियो छुपा

घर ओर आए यार दो
अतरों की छूटी बासना
ठंडी भरे मन आह

रखना रे पैर संभाल के
अतरों की ढकना बासना
छाती को धीर बंधा

मैं वारी
तेरी ठण्डी ठण्डी छांह
ओ कंटीली कीकरी तेरी ठंडी ठंडी छांह

●

कुंएं पर ठाढ़ी गोरी हे
तेरे सिर पर सालू
हिला ओ करे
हिला भुला ओ करे
जिस ललारी ने सालू रंगा है
ईश्वर उसी का भला ओ करे।
भला बुरा ओ करे।।

खुऐ पर खड़ोतिए गोरिए
तेरे सिरै दी गागर
हल्ला बो करै
हल्ला भुल्ला बो करै
जिस घम्यारै घड़ी तेरी गागर
उस दा पन्मेस्सर भला बो कर।
भला बुरा बो करै ॥

खुऐ पर खड़ोतिए गोरिए
तेरे नक्कै दा बेसर
हल्ला बो करै
हल्ला भुल्ला बो करै
जिस सन्यारै घड़ी तेरी बेसर
उस दा पन्मेस्सर भला बो करै।
भला बुरा बो करै ॥

●

भला मियां मंगलोट्टुआ हो !
राहे बिच बौंगलू तेरा
पल भर बौह्ना दे।
राहे बिच बौंगलू तेरा
पल भर बौह्ना दे।

भला मियां मंगलोट्टुआ हो !
चाएं चाएं बौंसरू बजायां;
पल भर बौह्ना दे।
राहे बिच बौंगलू तेरा
पल भर बौह्ना दे।

कुंएं पर ठाढ़ी गोरी हे
तेरे सिर की गागर
हिला ओ करे
हिला भुला ओ करे
जिस कुम्हार ने गागर गढ़ी है
ईश्वर उसी का भला ओ करे।
भला बुरा ओ करे ॥

कुंएं पर ठाढ़ी गोरी हे
तेरे नाक का बेसर
हिला ओ करे
हिला भुला ओ करे
जिस सुनार ने बेसर गढ़ा है
ईश्वर उसी का भला ओ करे।
भला बुरा ओ करे ॥

●

भला है तू मंगलोटुआ हो !
राह में बंगला तेरा
कि पल भर रुकने दे !
राह में बंगला तेरा
कि पल भर रुकने दे !

भला है तू मंगलोटुआ हो !
चाव से बंसी बजाना
कि पल भर रुकने दे !
राह में बंगला तेरा
कि पल भर रुकने दे !

भला मियां मंगलोटुआ हो
जोरैं जोरैं बद्दल बरदा
छत्तरी लैंना दे।
राहे बिच बौंगलू तेरा
पल भर बौह्ना दे॥

भला मियां मंगलोटुआ हो
गोदिया बाल न्याना
छत्तरी लैंना दे।
राहे बिच बौंगलू तेरा
पल भर बौह्ना दे॥

●

बुड्ड़ा बो गल पेया स्हेलड़ी, बुड्ड़ा।

होरनैं फड़ियां न रफल दुनालियां
मेरे बुड्डे नै फड़ी लेया डण्डा॥

होरनैं मारे पिज्जड़ - पाढ़े,
बुड्डे नै मारेया पिद्दा।

होरनैं चाढ़ियां सगले बलटोइयां,
बुड्डे नै चाढ़ेया डब्बा।

ओ बुड्ड़ा बो गल पेया स्हेलड़ी बुड्ड़ा।

●

भला है तू मंगलोटुआ हो
छम छम बादल झरे
कि छतरी लेने दे !
राह में बंगला तेरा
कि पल भर रुकने दे !!

भला है तू मंगलोटुआ हो !
गोद में बालक मेरे
कि छतरी लेने दे ।
राह में बंगला तेरा
कि पल भर रुकने दे !!

●

ओ बुड्ढा ! सहेली, गले पड़ा बुड्ढा ।

औरों न ली जब राइफल दुनाली
बुड्ढे ने पकड़ा डण्डा ।

औरों ने मारे, जब पाठे पाढ़े
बुड्ढा भी मार लाया पिद्दा ।

औरों ने चढ़ाए देगचे व बटले
बुड्ढे ने चढ़ाया डिब्बा ।

ओ बुड्ढा ! सहेली, गले पड़ा बुड्ढा ।

●

बारैं बरसैं ढोली घर आया
जाई सुत्ता पछवाड़ ।

उठेयां कालिये बदलिये
जाई बरेयां पछवाड़ ।

पैंसे जिन्नी बूंद पवै
म्होले जिन्नी धार ।

बारैं बरसैं कुमेदान घर आया
रुस्सी सुत्ता पछवाड़ ।

●

घिरी घटा घनघोर ठंडियां बूंदां पेइयां ।
आए नईं चितचोर ठंडियां बूंदां पेइयां ।।

बाग-बगीचैं बुलबुल बोलै
धारैं मस्त चकोर ।
गासा गीत पपीहा गांदा
जाड़ैं मस्त चकोर ।।

ठंडियां बूंदां पेइयां ।।

चार चफेरैं बिजली कड़कै
पैंछी पांदे शोर ।
साधैं होश निं बिन्द घरैं दी
राखियां करदे चोर ।।

ठंडियां बूंदां पेइयां ।।

आए नईं चितचोर ठंडियां बूंदा पेइयां ।
घिरी घटा घनघोर ठंडियां बूंदां पेइयां ।।

●

बारह बरस बाद बालम घर आया
जा सोया पिछवाड़े ।

उठ ओ काली बदरिया
जाके बरस पिछवाड़े ।

पैसे जितनी बुंदियां बरसें
मूसल जैसे धारे ।

बारह बरस बाद आया कमांडेंट
रूठ सोया पिछवाड़े ।

●

घिरी घटा घनघोर ठण्डी बूंदें गिरीं
आए नहीं चितचोर ठण्डी बूंदें गिरीं

बाग बगीचों बुलबुल बोले
धारों सुन्दर मोर ।
नभ में गीत पपीहा गाए
वन में मस्त चकोर ।।

ठण्डी बूंदें गिरीं ।।

चारों ओर बिजुरिया कड़के
पंछी करते शोर ।
साधु होश करें नहीं घर की
रखवाले हैं चोर ।।

ठण्डी बूंदें गिरीं ।।

आए नहीं चितचोर ठण्डी बूंदें गिरीं ।
घिरी घटा घनघोर ठण्डी बूंदें गिरीं ।।

●

जम्मू दी कण्डिया बरखा लग्गी ऐ
ते धारें पवै दे पाले,
तेरे सोह्
धारें पवै दे पाले।
ओ लोभिया चंबे देया।

देह सीत्तै नै डग डग कंबदी
ते मनै च पवै दे जाले
तेरे सोह्
मनै च पवै दे जाले।
ओ लोभिया चंबे देया।

चार चफेरै गै छाई गेदे न
बदलू काले काले
तेरे सोह्
बदलू काले काले।
ओ लोभिया चंबे देया।

बदलुएं कोला बी उच्चा होई होई
मन तुकी देया दा आले
तेरे सोह्
मन तुकी देया दा आले
ओ लोभिया चंबे देया॥

●

जम्मू की कंडी में बरखा लगी है
धारों पे पड़ते पाले,
कसम तेरी
धारों पे पड़ते पाले
ओ लालची चंबे के !!

देह शीत से डगडग कांपे,
मन को आग जलाए
कसम तेरी
मन को आग जलाए।
ओ लोभी चंबे के !!

सभी ओर से घिर घिर आए
बादल काले काले
कसम तेरी
बादल काले काले।
ओ लोभी चंबे के !!

मेघों से भी ऊंचा उठ उठ
मनवा तुझे पुकारे,
कसम तेरी
मनवा तुझे पुकारे।
ओ लोभी चंबे के !!

●

गोरी चलीऐ प्योकड़ैं
    तां अउं पुरोह्त बनी टुरी पौंङ ।
तूं पुरोह्त बनी टुरी पौगा
    तां अउं पालकिया पेई जांङ ।।

तूं पालकिया पेई जागी
    तां अउं पट्टी बिच सुसरू होंङ ।
तूं पट्टी बिच सुसरू होगा
    तां अउं कूंज बनी उड्डी जांङ ।।

तूं कूंज बनी उड्डी जागी
    तां अऊं बाज बनी फड़ीं लैंङ ।
गोरी चलीऐ प्योकड़ैं
    तां अउं पुरोह्त बनी टुरी पोंङ ।।

●

उच्चिया रिड़िया बौंगलू पोआन्नियां
पल भर बौंगलुए बेई लै तूं—
राजे देआ नौकरा !

दन्द तां तेरे चम्बे दियां कलियां
खोड़ दी दातन लाई लै तूं—
राजे देआ नौकरा !

जुल्फां तां तेरियां गज-गज लम्मियां
सीसी भरी तेला दी लाई लै तूं—
राजे देआ नौकरा !

अक्खियां तां तेरियां अम्बै दिआं फाड़ियां
सुरमे-सलाइयां पाई लै तूं—
राजे देआ नौकरा !

●

गोरी चली जो मायके,
मैं बन पुरोहित चल दूंगा।
तू बन पुरोहित चल देगा,
तो मैं डोली चढ़ जाऊंगी ।।

जो तू डोली चढ़ जाएगी,
मैं बांस-बीच 'सुसरू' हूंगा।
तू बांस-बीच 'सुसरू' होगा
मैं कूंज बनी उड़ जाऊंगी ।।

तू कूंज बनी उड़ जाएगी,
बन बाज़ पकड़ तुझ को लूंगा।
गोरी चली जो मायके,
मैं बन पुरोहित चल दूंगा ।।

●

ऊंचे टीले बनवाऊं बंगला
पल भर बंगले में बैठ तू—
राजे के नौकर ओ !

दांत तुम्हारे चम्पा कलियां
अखरोट की दातुन करले तू—
राजे के नौकर ओ !

ज़ुल्फ़ें तेरी गज़ गज़ लम्बी
शीशी भर तेल लगा ले तू—
राजे के नौकर ओ !

आंखें तेरी आम की फांकें
सलाई से सुरमा लगा ले तू—
राजे के नौकर ओ !

●

बे मैं गूंदां ललारन गुन्दलै दी ।
तूं पुत्तरै गी समझा,
ओ चौधरी !
पुत्तरै गी समझा ।।

लेई द्राटु में जाड़ जो चलियां,
बड्डुन निं दिंदा मिकी घा;
ओ चौधरी !
पुत्तरै गी समझा ।।

बाड़िया साह्ड़िया बेलना निं लायां,
पलै पलै साह्ड़ै फेरे निं पायां,
भरदा ई ठंडे साह्;
ओ चौधरी !
पुत्तरै गी समझा ।।

सूट तां ए मिकी लान निं दिंदा,
कजला ते ए मिकी पान निं दिंदा,
रोकी खड़ोंदा मेरा राह्;
ओ चौधरी !
पुत्तरै गी समझा ।।

●

रे मैं 'गूंदां' ललारिन गून्दल की
तू बेटे को समझा,
ओ चौधरी !
बेटे को समझा ।।

हंसिया ले मैं वन को निकली,
दे न काटने घास;
ओ चौधरी !
बेटे को समझा ।।

बाड़ी हमारी बेलन लगाना ना
घर हमारे फेरे लगाना ना
ठंडी भरे है आह;
ओ चौधरी !
बेटे को समझा ।।

सूट पहनने दे न मुझे यह,
कजरा लगाने दे न मुझे यह,
रोका करे है राह;
ओ चौधरी !
बेटे को समझा ।।

●

"ना रो नाजो रानी, दस्स तुगी गलाया केह् ?"

"ग्राखदी, दस्स तूं गै दस हां,
तेरे कन्नै ब्होई के, मैं सुख पाया केह् ?
नेईं चज्जै दा टल्ला कोई लाया
नेईं कोई सूट बनवाया।
लोकें दियां लाड़ियां करन शकीनियां,
में गल खद्दड़ पाया।
उलटी मां तेरी ग्राखदी—
इस लाड़िया नै कीता खेह्
तेरे कन्नै ब्होई के, मैं सुख पाया केह् ?"

"चंगा चोखा तूं खन्नी एं, लान्नी एं
फिरी वी तूं मिकी कैं घुरकानी एं।
तेरे जनेह्ई मैं कोई नि दिक्खी
नखरे बाज जनानी एं।
जे कम्म दसदी मां मेरी
नखरे करनी एं सौ . जनेह्
ना रो नाजो रानी, दस्स तुगी गलाया केह् ?"

"तूं बी मिगी गै दोस दिन्ना एं,
पुच्छदा नि ग्रपनी माऊ गी।
जाई के पुच्छ हां की कडदी ऐ
गालियां मेरे भ्राऊ गी।
पुट्ठियां पुट्ठियां गल्लां गलांदी ऐ,
मुंहां बिच ग्रौंदा ऐ जे।
तेरे कन्नै ब्होई के में सुख पया केह् ?"

●

"न रो नाजो रानी तुझे कहा है क्या ?"

"कहे, तू ही कह रे
तुझ से करके ब्याह, अरे छैला ! सुख पाया है क्या ?
नहीं काम का कपड़ा पहना
नहीं सूट कोई सिलवाया।
लोगों की बहुएं करें शकीनी
मैंने तो बस खद्दर पहना।
फिर भी है मां तेरी कहती—
इस बहू ने खाक - मिलाया,
तुझ से करके ब्याह, अरे छैला! सुख पाया है क्या ?"

"तू भला पहनती-खाती है
फिर भी मुझ को धमकाती है।
तुझ जैसी देखी कोई ना
नखरे बाज़ 'जनानी' है।
जो काम बताए मां मेरी
करती है तू सौ - सौ नखरा।
न रो नाजो रानी; तुझे कहा है क्या ?"

"तू भी तो दोष मुझे देता
पूछे ना अपनी मैया को।
जा पूछ जरा—क्यों देती है
गाली वह मेरे भैया को।
टेढ़ी - मेढ़ी बातें करती
कहती जो मुंह में जाता आ,
तुझ से करके ब्याह, अरे छैला सुख पाया है क्या" ?

●

पान्ना जसी पतली, बागैं बागैं फिरा दी
झुल्लै चमेली दी डाली।

मोर मुगट, मत्थै तिलक बराजैं
कुण्डल दी शोभा न्यारी
कां गई ऐ राधा प्यारी।
भला मेरे कान्ह कन्हाई जी।
नन्द लाल कन्हाई जी।
बासुदेव कन्हाई जी।।

हत्थै बिच दन्दलू
मूंडे पर संगलू
गलै बिच कफ्फनू पाई लैना,
मेरे कान्ह कन्हाई जी।

●

बेई लैना बो मित्तरा पल भर बेई लैना।

पल भर बेई के दौं गल्लां करी लैनियां,
कदी हस्सी लैंना, कदी अक्खीं भरी लैनियां

मनै दा दुख-सुख केई लैना
बेई लैना बो मित्तरा पल भर बेई लैंना।।

●

पान जैसी पतली बाग़-बाग डोलती
झूले चमेली की डाली।

मोर मुकुट, माथे तिलक विराजे
कुण्डल की शोभा न्यारी
कहां गयी राधा प्यारी
भला मेरे कान्ह कन्हाई जी।
नंद के लाल कन्हाई जी।
वासुदेव कन्हाई जी।।

हाथ में दरांती
कांधे पे सांकल
कफ़न गले में डालूंगी
मेरे कान्ह कन्हाई जी।

●

रुक जाना ओ मित्तरा, पल भर रुक जाना

पल भर रुक दो बातें करना
हंसना, नयन कभी भरना

मन का दुःख-सुख कह लेना
रुक जाना ओ मित्तरा, पल भर रुक जाना।।

●

मरद :   पिपला दै हेठ गोरी कैं खड़ी ?
कैं तेरा मैलड़ा भेस,
क्या घर सस्स बुरी ?

जनानी :   दस चलदेया राहिया,
तिजो के पेई ?
नां मेरा मैलड़ा भेस,
नां घर सस्स बुरी ।।

मरद :   नक्कै जो देंगा तिज्जो बेसर
गल जो देंगा पंजलड़ी ।
चल तूं सपाइयां दै नाल
देंगा तिज्जो सुख-घड़ी ।।

जनानी :   अग्ग लग्गैं तेरे गहनेयां जो
नदिया रुड़ै तेरी पंजलड़ी ।
जदुं औंग्गागोरी दा कैन्त
तां करगी सुख - घड़ी ।।

मरद :   धन धन तेरी अम्बड़ी जो
जिन्नै ए जेई धी जाई ।
धन धन उस रसिए दे भाग
जेदै तूं लड़ लाई ।।

●

नाम कटाई घरै आई जा........ओ ।

होरनें सपाइयें दे चिट्टे चिट्टे कपड़े,
तूं कज्जो कीता मैला भेस, ओ सपाइया ।

पुरुष : पीपल-तले गोरी क्यों खड़ी ?
क्यों तेरा मैला भेस,
घर में क्या सास बुरी ?

स्त्री : ओ बोल तू पथिक
तुझ को क्या पड़ी ?
न मेरा मैला ओ भेस,
घर में न सास बुरी ।।

पुरुष : नाक को दूंगा तुझे बेसर
दूंगा गले की पांच-लड़ी ।
चल तू सिपाहियों के संग,
दूंगा तुझे मैं सुख - घड़ी ।।

स्त्री : गहनों को लग जाए आग रे,
नदिया बहे तेरी पांच-लड़ी ।
जब आये गोरी का कन्त,
तब ही करेगी सुख - घड़ी ।।

पुरुष : ओ जिसने जनी यह बेटी
धन्य वह मां बड़ भागी ।
उस रसिये के बड़े भाग्य ओ
जिस के तू संग लागी ।।

●

नाम कटा घर आ जा.........ओ ।

और सिपाहियों के उजले कपड़े,
काहे तेरा मैला भेस, ओ सिपाहिया ।

लम्में लम्में सफरें नालें दा पानी ओ,
पीन नईं ओ दिन्दे जमेदार, ओ सपाइया ।।

कच्चियां तां बैरकां सपाई स्हाड़े रौह्न्दे,
पक्कियां च रौह्न्दे औह्देदार, ओ सपाइया ।।

सिकल दपैह्रीं परेटां जे करदे,
काशन दिन्दे औह्देदार, ओ सपाइया ।।

गौह नेईं कर जुआन्निया दा ।
तूं मान नेईं कर जुआन्निया दा ।।
ए कच्ची ऐ
सूत्तरी तंद चिड़िए ।।

गौह नेईं कर जुआन्निया दा ।
तूं मान नेईं कर जुआन्निया दा ।।
ए मुड़कनी
कच्चू दी बंग कुड़िए ।।

गौह नेईं कर जुआन्निया दा ।
तूं मान नेईं कर जुआन्निया दा ।।

लम्बे सफर सैयां, नालों का पानी
पीने न दें जमादार, ओ सिपाहिया।

मिलती है बैरक सिपाहियों को कच्ची
पक्की रहें औह्‌दे दार, ओ सिपाहिया।

भर दोपहरी करते परेड वे
काशन दें औहदेदार, ओ सिपाहिया।

●

विश्वास नहीं कर यौवन का।
तू मान नहीं कर यौवन का॥
यह कच्ची डोरी—
चिड़िया री॥

विश्वास नहीं कर यौवन का।
तू मान नहीं कर यौवन का॥
टूटेगी
कांच की चूड़ी री॥

विश्वास नहीं कर यौवन का।
तू मान नहीं कर यौवन का

●

सस्सू जम्मी कुड़ी
ननान जम्मेया मुंडा
मेरै घर जम्मी पेया बिल्ला,
ते अज्ज दिल सड़ी बो गेया ।

के किश खन्दी कुड़ी
ते के किश खन्दा मुंडा
के किश खन्दा मेरा बिल्ला बो;
बे अज्ज दिल सड़ी बो गेया ।

गरी छुआरा खन्दी कुड़ी
ते बर्फी पेड़ा मुंडा
दुद्दनियां चट्टै मेरा बिल्ला,
ते अज्ज दिल तरी बो गेया ।

टुरी पेइऐ कुड़ी
ते टुरी पेया मुंडा
टपोलियां मारै मेरा बिल्ला;
ते अज्ज दिल तरी बो गेया ।

मरी गेइऐ कुड़ी
ते मरी गेया मुंडा
बंडेरै बंडेरै मेरा बिल्ला;
ते अज्ज दिल तरी बो गेया ।

●

सास के जन्मी लड़की
ननद के जन्मा लड़का
मेरे घर जन्मा बिल्ला;
लो आज दिल जल ही गया।

क्या कुछ खाए लड़की,
रे क्या कुछ खाए लड़का
क्या खाए मेरा बिल्ला ओ;
रे आज दिल जल ही गया।

गरी छुहारा खाए लड़की,
रे बरफी पेड़े लड़का
दूधनियां चाटे बिल्ला;
लो आज दिल खिल ही गया।

चलने लगी है लड़की
रे चलने लगा है लड़का
भरे छलांगें बिल्ला;
लो आज दिल खिल ही गया।

मर गयी है लड़की
रे मर गया है लड़का
फिरे मुंडेरों बिल्ला;
रे आज दिल खिल ही गया।

नां कर गोरिए मैलियां अखियां
असैं परदेसिएं चली जाना।

नाओ - नदी संजोग दे मेले
कुन जानै कदूं मुड़ी औना।

भ्याग हुन्दे टुरी जाना गोरिये
मनै बिच तेरा चेता लेई जाना।

मत कर गोरी मैली अखियां
कल परदेसी जाएंगे।

नाव-नदी संयोग के मेले
कब जाने मुड़ पाएंगे।

पौ फटते चल देंगे गोरी
याद तेरी ले जाएंगे।

चन्न

(१)

चन्न म्हाड़ा चढ़ेया प्हाड़ैं दिया कंदरा ।
सुक्की गेइयै जान मेरी, रेइ गेया पिंजरा ।।
बड़ी ऐ दोग्रासी मेरी जान ग्रो ।
मिलना जरूर मेरी जान ग्रो ।।

(२)

चन्न म्हाड़ा चढ़ेया टिब्बिया दै ग्रोह्लै ।
भन्नी सुट्टां टिब्बियां जे चन्न मुक्खा बोलै ।।
मिलन कियां होग मेरी जान ग्रो ।
मिलना जरूर मेरी जान ग्रो ।।

(३)

चन्न म्हाड़ा चढ़ेग्रा लग्गा पारैं किंगरी ।
चन्ना गी बो प्यार देना नत्थ करिऐ खिंगरी ।।
मुक्कना बसोस मेरी जान बो ।
मिलना जरूर मेरी जान बो ।।

(४)

चन्न म्हाड़ा चढ़ेया गद्दिएं दै डेरें ।
मौती मरनां ग्रपनी ते जम्मै लग्गना तेरै ।।
बड़ी ऐ दोग्रासी मेरी जान हो ।
मिलना जरूर मेरी जान हो ।

(५)

चन्न म्हाड़ा चढ़ेया उप्पर रजौरिया ।
बनी जायां पक्खरू ते मिली जायां चोरिया ।।
बड़ी ऐ दोग्रासी मेरी जान बो ।
मिलना जरूर मेरी जान बो ।।

(१)

मेरा चांद पर्वत - गुहा पर उगा है।
गयी सूख काया, यह पिंजर रहा है।
बड़ी है उदासी मेरी जान ग्रो।
मिलना जरूरी मेरी जान ग्रो ।।

(२)

उगा चांद मेरा है टीले के पीछे।
इसे तोड़ दूं चांद मुख से जो बोले ।।
मिलन कैसे होगा मेरी जान ग्रो।
कि मिलना जरूर मेरी जान ग्रो ।।

(३)

चढ़ा चांद मेरा लगा पार जा कर।
उसे प्यार देना है नथ को हटा कर ।।
चुकेगा यह दुख मेरी जान बो।
कि मिलना जरूरी मेरी जान बो ।।

(४)

उगा चांद मेरा है गद्दिन के डेरे।
मरूं मौत ग्रपनी लगूं नाम तेरे ।।
बड़ी है उदासी मेरी जान हो।
मिलना जरूरी मेरी जान हो ।।

(५)

उगा चांद मेरा है ऊपर - राजौरी।
कि बन कर पखेरू तू मिल जाना चोरी ।।
बड़ी है उदासी मेरी जान ग्रो।
कि मिलना जरूरी मेरी जान ग्रो ।।

(६)

चन्न म्हाड़ा चढ़ेया उप्पर रयासिया ।
थोड़ा थोड़ा मंदा चन्नां मती ऐ दोआसिया ।।
मिलन कियां होग मेरी जान हो ।
मिलना जरूर मेरी जान हो ।।

(७)

चन्न म्हाड़ा चढ़ेया ऐ नदिया दे पार ओ ।
लुट्टी लैनी असें जिन्दे जौबनै दी ब्हार ओ ।।
मुक्कना बसोस मेरी जान हो ।
मिलना जरूर मेरी जान हो ।।

(८)

चन्न म्हाड़ा चढ़ेया किक्करै दे रुक्ख ओ ।
निक्की होंदी मरी जंदी मुक्की जंदे दुःख ओ ।।
बड़ा ऐ बसोस मेरी जान बो ।
मिलना जरूर मेरी जान बो ।।

(६)

उगा चांद मेरा है ऊपर - रियासी ।
कि है याद थोड़ी, बहुत ही उदासी ।।
कैसे मिलन होगा मेरी जान हो ।
कि मिलना जरूरी मेरी जान हो ।।

(७)

चढ़ा चांद मेरा ओ नदिया के पार
यौवन की हम लूट लेंगे बहार ।।
चुकेगा यह दुख मेरी जान हो ।
कि मिलना जरूरी मेरी जान हो ।।

(८)

मेरा चांद कीकर के ऊपर उगा रे ।
कि छोटी ही मरती तो चुक जाते दुखड़े ।।
है अफसोस भारी मेरी जान बो ।
कि मिलना जरूरी मेरी जान बो ।।

●

भाखां

कालेया हरणां जंगलें चरणां
पत्तर जिनां दे पीले ।
कैन्त जिनां दे नित्त बिजोगी
नारां दे क्या हीले ?

फट्टे दा चोला पेया पराना
मत कोई सियै दरजी ।
दिल दा मैह्रम कोई नईं मिलया
जो मिलया ग्रलगरजी ।।

उच्चिए लम्मिए सब्ज खचूरी !
कुन इस बाग दा माली ?
हर हर बूटे पानी जे दिन्दा
इक निं रखदा खाली ।।

बाल कुसै दी माई निं मरयो
भैन दा मरयो निं भाई ।
गबरू कुसै दी नार निं मरयो
तीनों फिरन सदाई ।।

●

ढोल सपाइया बे
मोड़ घरैं जो घोड़ा ।
ढोल सपाइया बे
मेरा तरसै रंगला जोड़ा ।।

ढोल सपाइया बे
चिट्ठियां ग्राइयां ।
ढोल सपाइया
ग्रसैं गलै 'नैं लाइयां ।।

काले मृग ! चरते वन - वन में
पत्ते जिनके पीले ।
कंत कि जिनके नित्य वियोगी
'नारों' के क्या हीले ?

चिथड़े चोला पड़ा पुराना
कोई न सीता दरजी ।
दिल का महरम कोई न पाया
जो पाया अलगरजी ।।

ऊंची लम्बी हरी खजूर
कौन इस बाग का माली ।
हर बिरवे को पानी देता
एक न रखता खाली ।।

किसी बाल की मरे न मां, ना
बहिन किसी का भाई ।
किसी युवक की नार मरे ना
तीनों फिरें सौदाई ।।

ढोल सिपाही ओ
घर - ओर पलट ले घोड़ा ।
ढोल सिपाही ओ
तरसे रंगीला जोड़ा ।।

ढोल सिपाही ओ
चिट्ठियां आईं रे ।
ढोल सिपाही ओ
गले लगाईं रे ।

ढोल सपाइया
सावन आया ।
ढोल सपाइया बे
रिम-झिम लाया ।।

ढोल सपाइया बे
छम छम रोआं ।
दाग बजोगें दे
मल मल धोआं ।।

●

बालू कढ़ाना में डब्बी बिच पानां
बो पाने बाली प्योकै नी ।
जागत आणी प्योकै नी
कोई रोह्ल प्यारी प्योकै नी ।

कोई नैंन बन्दी दे रोंदे नी ।
कोई रोई रोई पछोतांदे नी ।
जियां धोबी कपड़े धोंदे नी ।
धोई धोई सुकना पांदे नी ।
पट्टुआरी मुंडेआ ।।

कंगन कढ़ाना में डब्बी बिच पानां ।
बो पाने बाली प्योकै नी ।
जागत आणी प्योकै नी ।
कोई रोह्ल प्यारी प्योकै नी ।

कोई नैंन बन्दी दे रोंदे नी ।
कोई रोई रोई पछोतांदे नी ।
जियां धोबी कपड़े धोंदे नी ।
धोई धोई सुकना पांदे नी ।
पट्टुआरी मुंडेया ।।

ढोल सिपाही ओ
सावन आया रे।
ढोल सिपाही ओ
रिमझिम लाया रे।।

ढोल सिपाही ओ
छम छम रोऊं रे।
दाग वियोगों के
मल मल धोऊं रे।।

•

बालू गढ़ाऊं डब्बी में रखूँ
सजने वाली मैके है।
अल्हड़ गोरी मैके है।
मेरी रौनक प्यारी मैके है।

बांदी के नयना रोते हैं
ये रो रो कर पछताते हैं।
ज्यों धोबी कपड़े धोते हैं।
धो धो कर पुनः सुखाते हैं।
ओ पटवारी छोरे !

कंगन गढ़ाऊं डिब्बी में रखूं
सजने वाली मैके है।
अल्हड़ गोरी मैके है।
मेरी रौनक प्यारी मैके है।

बांदी के नयना रोते हैं।
ये रो रो कर पछताते हैं।
ज्यों धोबी कपड़े धोते हैं।
धो धो कर पुनः सुखाते हैं।
ओ पटवारी छोरे !

कड़ियां कढ़ानां, में डब्बी बिच पानां।
मेरी पाने बाली प्योकै नी।
कोई जागत आणी प्योकै नी।
मेरी रोह्ल प्यारी प्योकै नी।

कोई नैन बन्दी दे रोंदे नी।
कोई रोई रोई पछोतांदे नी।
जियां धोबी कपड़े धोंदे नी।
कोई धोई धोई सुकना पांदे नी।
पट्टुआरी मुंडेया !

यार मिगी घरै आली नै मारेया।।

चौकलै 'नै मारेया, बेलनै 'नै मारेया।
तवैं कन्नै कीत्ता मूंह् काला।।

पलंग बी खूसेया, बछैन बी खूसेया।।
मिगी देई गेई कंबल काला।।

कुड़ी बी लेई गेई, मुंडा बी लेई गेई।
मिगी परती करी गेई कोआरा।।

पंज सत्त यार हे बैठे मेरे।
में रोआं शर्मी दा मारा।।

कड़ियां गढ़ाऊं, डिब्बी में रखूं
सजने वाली मैके है।
अल्हड़ गोरी मैके है।
मेरी रौनक प्यारी मैके है।

बांदी के नयना रोते हैं
ये रो रो कर पछताते हैं।
ज्यों धोबी कपड़े धोते हैं।
धो धो कर पुनः सुखाते हैं।
ओ पटवारी छोरे।

●

यार मुझे घर वाली ने मारा।

चकले से मारा, बेलन से मारा।
तवे से किया, मुख काला ॥

पलंग भी छीना, बिछौना भी छीना।
बस दे गयी कंबल काला ॥

बेटी भी ले गयी, बेटा भी ले गयी।
कुंआरा हुआ मैं दुबारा ॥

सारे यार थे बैठे मेरे।
रोया मैं लाज का मारा ॥

●

अन्दरा बेगम बाह्‌र निकली
मैंह्‌दी डल्ह्‌कैं तलिया दा।

नौलक्ख हार गले बिच सोव्बै,
मोती डल्ह्‌कै बालुऐ दा।

इयो जुग्रानी चार ध्याड़ै,
नईं भरोसा घड़िया दा।

न्हेरिया रातीं लिश्कन तारे,
तां डर लगदा गलिया दा।

•

सञां पेइयां कलबेलां होइयां
रांझा मंगदा डेरा जी।

तेरा डेरा मेरै निं बनदा
में घर स्हौरा स्याना जी।
स्हौरे तेरे गी तख्त बठामां
बैठा दा राज कमावै जी॥

गली गली बिच रोकैं टोकैं
जात कजात ना जानैं जी।
सञां पेइयां कलबेला होइयां
रांझा मंगदा डेरा जी॥

तेरा डेरा मेरै निं बनदा
में घर सस्स स्यानी जी।
सस्सू तेरी गी पलंग बठामां
बैठी दी हुकम चलावैं जी।

अन्दर से बेगम बाहर निकली,
तली की चमके मेंहदी रे।

नौलख-हार गले में शोभे,
नथ का चमके मोती रे।

यही जवानी चार दिनों की,
नहीं भरोसा पल का रे।

रात अंधेरी टिमटिम तारे,
गलिया में डर लागे रे।

●

संझा आई, दिवस गया ओ,
रांझा मांगे डेरा जी ।।

तेरा डेरा मेरे बने ना
घर में ससुर सयाना जी।
ससुर तुम्हारा तख्त बिठाऊं
बैठा राज चलावे जी।

गली गली में रोको टोको
जाति कुजाति न जानो जी।
संझा आई, दिवस गया ओ;
रांझा मांगे डेरा जी ।।

तेरा डेरा मेरे बने ना
घर में सास सयानी जी।
सास तुम्हारी पलंग बिठाऊं
बैठी हुकम चलावे जी ।।

गली गली बिच रोकैं टोकैं
जात कजात ना जानें जी।
सञा पेइयां कलबेला होइयां
रांझा मंगदा डेरा जी।।

तेरा डेरा मेरै नि बनदा
में घर ननद कुआरी जी।
ननद तेरी दा ब्याह् करामां
मुड़ी इस नगरी नि आवैंजी।।

गली गली बिच रोकैं टोकैं
जात कजात ना जानें जी।
सञां पेइयां कलबेला होइयां
रांझा मंगदा डेरा जी।।

तेरा डेरा मेरै नि बनदा
में घर कंत ञ्यानां जी।
कैंतै तेरे दा ब्याह् करामां
मेरा डेरा तेरै जी।।

गली गली बिच रोकैं टोकैं
जात कजात ना जानैं जी।
सञां पेइयां कलबेला होइयां
रांझा मंगदा डेरा जी।।

कैंत मेरे दा ब्याह् करानां
आपूं फिरैं की कुआरा जी।
तूं गुजरी सिर लेखैं लिखिएं
तां में फिरां कुआरा जी।।

गली गली में रोको टोको
जाति कुजाति न जानो जी।
संझा आई दिवस गया ओ
रांझा मांगे डेरा जी॥

तेरा डेरा मेरे बने ना
घर में ननद कुंआरी जी।
तेरी ननद का ब्याह् कराऊं
इस नगरी ना लौटे जी॥

गली गली में रोको टोको
जाति कुजाति न जानो जी।
संझा आई, दिवस गया ओ
रांझा मांगे डेरा जी॥

तेरा डेरा मेरे बने ना
घर में कंत है छोटा जी।
कंत तेरे का ब्याह कराऊं
मेरा डेरा तेरे जी॥

गली गली में रोको टोको
जाति कुजाति न जानो जी।
संझा आई दिवस ढला ओ
रांझा मांगे डेरा जी॥

कंत मेरे का ब्याह रचाए
खुद क्यों फिरे कुंआरा जी।
भाग्य बंधी है तू ही गुजरिया
तो ही फिरूं कुँआरा जी॥

●

बिच मरीका लाम लग्गी पेई भारी
लग्गा बड़ा भारी बे जंग जुलमैं दा।
स्रो कम्बी गेइयैं भेई दुनियां सारी
लग्गा बड़ा भारी बे जंग जुलमैं दा॥

स्रारें तोफां भेई पारें तोफां
पेइयैं धूएं दी गुप्पकारी
लग्गा बड़ा भारी बे जंग जुलमैं दा॥

स्रारें बन्दूकां भेई पारें बन्दूकां
लाहुस्रा भेई बगदी खाली
लग्गा बड़ा भारी बे जंग जुलमैं दा॥

स्रट्ठें - सट्ठें दा नेंदे ताली
जरो गल्ल निं मनदे स्हाढ़ी
लग्गा बड़ा भारी बे जंग जुलमैं दा॥

स्रन्दर बेइयैं मामां रोंदियां
गैलियें तड़फन नारीं
लग्गा बड़ा भारी बे जंग जुलमैं दा॥

●

काली काली चुन्नी उड्डु रेई
होई मजेदार॥
उड्डी उड्डी चुन्नी
मेरे स्हौरे ने बी दिक्खी लेई
कचैरी रौला पेई गेया
काली काली चुन्नी उड्डु रेई
होई मजेदार॥

अमरीका में लाम लगी है भारी
छिड़ गयी जंग है जुल्म भरी।
भई, कांप उठी है दुनियां यह सारी
छिड़ गयी जंग है जुल्म भरी ।।

इस पार तोपें, भई उस पार तोपें
धुएं की पड़ी है गुपकारी
छिड़ गयी जंग है जुल्म भरी ।।

इस पार बंदूकें, उस पार बंदूकें
बह चली लहू की नाली
छिड़ गयी जंग है जुल्म भरी ।।

चुन चुन कर गबरू ले जाते
सुनते नहीं बात हमारी
छिड़ गयी जंग है जुल्म भरी ।।

घर के भीतर मांएं रोतीं
गलियों में तड़पें नारी
छिड़ गयी जंग है जुल्म भरी ।।

●

काली काली चुनरिया उड़ रही
हुई मजेदार ।।

उड़ती चुनरिया
ससुर ने भी देख ली
कचहरी में पड़ गया शोर।
काली काली चुनरिया उड़ रही
हुई मजेदार ।।

उड्डी उड्डी चुन्नी
मेरे माहिये ने बी दिक्खी लेई
दफ्तर रौला पेई गेया
काली काली चुन्नी उड्ड रेई
होई मजेदार ॥

उड्डी उड्डी चुन्नी
मेरी सस्सू नै बी दिक्खी लेई
कोठे पर थाली बजा रेई
होई मजेदार ॥

काली काली चुन्नी उड्ड रेई
होई मजेदार ॥

●

कनकां पक्कियां बे ढोला ।
खेत्तर फिरदियां बे ढोला ।
भैनां सक्कियां बे ढोला ।

कनकां पक्कियां बे ढोला ।
रित्तां बदलियां ने ढोला ।
बुनदियां पक्खियां बे ढोला ।

कनकां पक्कियां बे ढोला ।
बैरी घूरदे बे ढोला ।
तक्कां रक्खियां बे ढोला ।

कनकां पक्किया बे ढोला ।
प्रीतां लग्गियां बे ढोला ।
बलगन अक्खियां बे ढोला ।

●

उड़ती चुनरिया
माही ने भी देख ली
दफ्तर में पड़ गया शोर।
काली काली चुनरिया उड़ रही
हुई मजेदार ।।

उड़ती चुनरिया
मेरी सास ने भी देख ली
छत पे बजाए थाली;
हुई मजेदार ।।

काली काली चुनरिया उड़ रही
हुई मजेदार ।।

●

कनकें पक गयीं बे ढोला।
खेत में फिरतीं बे ढोला।
सगी दो बहनें बे ढोला।

कनकें पक गयीं बे ढोला।
बहारें बदल गयीं ढोला।
बुनतीं पंखी बे ढोला।

कनकें पक गयीं बे ढोला।
कि बैरी घूर रहे ढोला।
कि रखते नज़रें बे ढोला।

कनकें पक गयीं बे ढोला।
प्रीतें जुड़ गयीं बे ढोला।
बिलखती अखियां बे ढोला।

●

सतजुग दै बिच ग्राखदे
ए कलजुग भाई जी ग्राएगा।
तां मन्दरें रैह्‌त दुकानां
पुजारी माल डोग्राए गा।।

ए बिकन गियां भाई बेटियां
दुनियां पाप कमाएगा।
जनानी पलंग पर बैठी
मर्द कम्म कमाएगा।

भले दी होनी निन्देया
झूठा जस्स कमाएगा।
लोकैं खाने मास शराब
पुड़िएं ग्रन्न बिकाएगा।।

ए सतजुग दैं बिच ग्राखदे
कलजुग भाई जी ग्राएगा।
नईं सच्चे दी कुसै मन्ननी
झूठा हुकम चलाएगा।।

●

ग्रो नईं मिटदी तकदीर
भाएं लख जतन करो।
ग्रो नईं छुड़नी कश्मीर
भाएं लख जतन करो।।

ग्रो जुद्दैं बिच लड़दे बीर
भाएं लख जतन करो।
ग्रो टप्पी जाना हाजी पीर
भाएं लख जतन करो।।

सतयुग में यूं कहते थे
यह कलियुग भाई आयेगा।
मंदिर बैठेंगे व्यापारी
सब माल पुजारी खायेगा॥

ओ बिका करेंगी बेटियां
सारा जग पाप कमायेगा।
नारी पलंग पर बैठेगी
नर सारा काम चलाएगा॥

अच्छे की होगी रे निन्दा
झूठा ही इज्जत पायेगा।
सब मदिरा-मांस उड़ाएंगे
पुड़ियों में अन्न बिकायेगा॥

सतयुग में यूं कहते थे
यह कलियुग भाई आयेगा।
सच्चे की कोई न मानेगा
झूठा ही हुक्म चलाएगा॥

●

ओ मिटे नहीं तकदीर
लाखों यत्न करो।
नहीं छोड़ेंगे कश्मीर
लाखों यत्न करो॥

ओ युद्ध में लड़ते वीर
लाखों यत्न करो।
लांघेंगे हाजी पीर
लाखों यत्न करो॥

ओ कट्टी सुट्टने ने सीस
भाएं लख जतन करो।
नईं मिटदी तकदीर
भाएं लख जतन करो।।

●

पैर मीरां दे झांझर सोभै हत्थ सोभै खड़ताल।
छन छन करदी मीरां नचदी अपने प्रभु दे ताल।।

ज्हैर प्याला भेजो भाई
भेजो मीरां दे पास।
गट-गट करदी मीरां पींदी
हरि मिलन दी आस।।

भरी पटारी सपैं दी
देओ मीरां दे हाथ
खोल पटारी मीरां दिखदी
फुल्ल न हारां-साथ।।

पैर मीरां दे झांझर सोभै हत्थ सोभै खड़ताल।
छन छन करदी मीरां नचदी अपने प्रभु दे ताल।।

●

ओ काटेंगे हम सीस
लाखों यत्न करो।
ओ मिटे नहीं तकदीर
लाखों यत्न करो।।

●

मीरां के पग झांझर सोहे हाथ में करताल।
छन छन करती मीरां नाचे अपने प्रभु के ताल।।

ज़हर प्याला भेजयो माई
भेजयो मीरां पास।
गट गट करती मीरां पीवे
हरि मिलने की आस।।

भरी पिटारी सांपों वाली
दीन्हीं मीरां - हाथ।
खोल पिटारी मीरां देखे
फूल हारों - साथ।।

मीरां के पग झांझर सोहे हाथों में करताल।
छन छन करती मीरां नाचे अपने प्रभु के ताल।।

●

राधके ! रस्ते च मदन गोपाल खड़े ।।
शाम'नें मेरा मन प्यार करे ।।

बार बार में फेरे पान्नीं ।
दुद्दै दी मटकी भर लेश्रान्नीं ।।
पर नईं कान्हा ध्यान धरे ।
राधके ! रस्ते च मदन गोपाल खड़े ।।

आखन लोक जे मीरां तारी ।
हुन के होआ मेरी बारी ।।
सौ सौ बारी पैंर फड़े ।
राधके ! रस्ते च मदन गोपाल खड़े ।।

●

ए जिन्द दौं दिनें दी परोह्‌नी ओ
इक दिन चिट्ठी कुसै बरागै बाली औनी ओ ।।

सांब सांब रक्खिये मैह्‌ल चबारे
इक दिन रात जंगल बिच औनी ओ ।।

सांब सांब रक्खियें धीआं पुत्तर
इक दिन रात अकेले औनी ओ ।।

●

राधिके ! रस्ते में मदन गोपाल खड़े ।
श्याम से मेरा मन प्यार करे ।।

बार बार मैं फेरे लगाऊं ।
दूध की मटकी भर भर लाऊं ।।
पर न कान्हा ध्यान करे ।
राधिके ! रस्ते में मदन गोपाल खड़े ।।

लोग कहें, थी मीरा तारी ।
क्या हुआ अब मेरी बारी ।।
सौ सौ बार चरण पकड़े ।
राधिके ! रस्ते में मदन गोपाल खड़े ।।

●

यह जीवन दो दिन का महमान
इक दिन, चिट्ठी विराग वाली आएगी ।

संभाल संभाल रखे महल चौबारे
इक दिन, रात जंगल में आएगी ।

संभाल संभाल रखे बेटे व बेटियां
इक दिन रात अकेले आएगी ।

●

बिसनपते

तेरी के किछ भेटां चाढ़ां मेरे भगवान जी ?

दुद्द देयां तां कट्टुए दा जूठा,
बच्छुएं दा जूठा ॥

तेरी के किछ भेटां चाढ़ां मेरे भगवान जी ?

फुल्ल देश्रां तां भौरें दा जूठा,
पक्खरें दा जूठा ।

तेरी के किछ भेटां चाढ़ां मेरे भगवान जी ?

जल देश्रां तां मच्छिएं दा जूठा
मगरें दा जूठा ।

तेरी के किछ भेटां चाढ़ां मेरे भगवान जी ?

फल देश्रां तां तोतें दा जूठा
चूहें दा जूठा ।

तेरी के किछ भेटां चाढ़ां मेरे भगवान जी ?

तन देश्रां तां कांमै दा जूठा
कैन्ता दा जूठा ।

तेरी के किछ भेटां चाढ़ां मेरे भगवान जी ?

●

मैं क्या कुछ भेंट चढ़ाऊं, मेरे भगवान जी ?

दूध चढ़ाऊं तो कटरों का जूठा,
बछड़ों का जूठा।

मैं क्या कुछ भेंट चढ़ाऊं मेरे भगवान जी ?

फूल चढ़ाऊं तो भंवरों का जूठा,
विहगों का जूठा।

मैं क्या कुछ भेंट चढ़ाऊं मेरे भगवान जी ?

जल जो चढ़ाऊं मछलियों का जूठा,
मगरों का जूठा।

मैं क्या कुछ भेंट चढ़ाऊं, मेरे भगवान जी ?

फल जो चढ़ाऊं तोतों का जूठा,
चूहों का जूठा।

मैं क्या कुछ भेंट चढ़ाऊं मेरे भगवान जी ?

तन जो दूं तो काम का जूठा,
कंत का जूठा।

मैं क्या कुछ भेंट चढ़ाऊं मेरे भगवान जी ?

●

माता दै दरबार जोतां जागदियां।
शेरां वाली दै दरबार जोतां जागदियां ।।

नंगे नंगे पैरें माता अकबर आया,
सुन्ने दा छत्तर चढ़ाया,
जोतां जागदियां।
माता दै दरबार जोतां जागदियां ।।

सुआ सुआ चोला माता अंग बिराजै,
चन्नन तिलक लगाया,
जोतां जागदियां।
माता दै दरबार जोतां जागदियां ।।

माता के दरबार ज्योतें जगती हैं।
शेरों वाली के दरबार ज्योतें जगती हैं।।

नंगे नंगे पैरों माता अकबर आया,
सोने का छत्र चढ़ाया;
ज्योतें जगती हैं।
माता के दरबार ज्योतें जगती हैं।।

लाल लाल चोला माता अंग विराजे,
चंदन तिलक लगाया,
ज्योतें जगती हैं।
माता के दरबार ज्योतें जगती हैं।।

गुजरी

(गूजरों सम्बन्धी गीत)

ए मथरा दी गुजरी बांकी,
ए गोकल दा ग्वाला।
ए मथरा दी गुजरी गोरी,
ए ग्वाला अत्त काला॥

सिर पर बिन्ना,
बिन्ने पर मटकी।
चलदियै गुजरी,
अटकी अटकी॥

रस्ता रोकी कौन खड़ोता ?
ए कोई बौंसरी बाला।

ए मथरा दी गुजरी बांकी
ए गोकल दा ग्वाला॥

●

मथुरा की यह बांकी ग्वालिन
यह गोकुल का ग्वाला।
मथुरा की है ग्वालिन गोरी
ग्वाला है अति काला ।।

सिर पर इंडुरी
मटकी उस पर।
चले गुजरिया
अटक अटक कर ।।

रस्ता रोके कौन खड़ा है ?
यह कोई बंसी वाला।

यह मथुरा की बांकी ग्वालिन
यह गोकुल का ग्वाला ।।

संस्कार गीत

घोड़ी जे बज्जी ऐ अम्बै दी डालिया
आपूं जे चढ़ेया शकार।
आपूं जे चढ़ेया शकार मराह्‌जेया
आपूं जे चढ़ेया शकार॥

थोड़ियां थोड़ियां मोर मरगाइयां
मते जे मारे गटार।
मते जे मारे गटार मराह्‌जेया,
मते जे मारे गटार॥

आपूं जे जोगे मोर मरगाइयां
सालिया जोगे गटार।
सालिया जोगे गटार मराह्‌जेया
सालिया जोगे गटार॥

●

जनयारो ! तुसें गी खाने दी के पेई ?
थोआड़ी मा खेत्तर गेई॥

आखदे जंदिया गी जान देयो।
सानूं गफ्फा लान देयो॥

पेट भरी खागे।
फिरी मा तोपन जागे॥

●

घड़े पर थाली बज्जै।
जीजे दी माए नच्चै॥

सानूं नच्च तमाशा दस्सै
घड़े पर थाली बज्जै॥

●

घोड़ी बंधी है आम की डाली
बन्ना चढ़ा रे शिकार।
आप चढ़ा है शिकार बन्ना
आप चढ़ा है शिकार॥

कुछ कुछ मारीं मोर-मुरगाबियां
मारे बहुत ही गिटार।
मारे बहुत ही गिटार बन्ने
मारे बहुत ही गिटार॥

मुरगाबियां-मोर अपने लिए सब
साली के वास्ते गिटार।
साली के वास्ते गिटार बन्ने
साली के वास्ते गिटार॥

●

बरातियो! खाने की तुम को क्यों पड़ी?
मां तुम्हारी खेत गयी॥

जाती है तो जाने दो।
हमको जी भर खाने दो॥

पेट भर कर खाएंगे।
फिर, मां ढूंढने जाएंगे॥

●

थड़े पर थाली बाजे।
जीजे की मैया नाचे॥

ओ नाचे खेल दिखाए।
घड़े पर थाली बाजे॥

●

आजा आजा, जीजा स्हाड़ैं कारखाने,
तुकी लोहे दा कम्म सिखा देइए।

तेरी मां दी बन जाए रेल - गड्डी,
तेरे बापू दा इंजन बना देइए।

तेरी भैनू दी बन जाए लाल भंडी,
उसी दिल्ली दी सैल करा देइए।

●

साली— छन्द पराग आखिए
छन्दै अग्गैं टेरनी।
जीजे दा बापू पेरना
जीजे दी अम्मा पेरनी॥

जीजा— छन्द परागै आखिए
छन्दै अग्गैं मोर।
साली दी सस्स शकीननी
कड्डी लेई गे चोर॥

●

ग्राजा जीजा हमारे तू कारखाने,
तुमको लोहे का काम सिखा दें हम।

तेरी मां की तो बन जाए रेल गाड़ी,
तेरे बापू का इंजन बना दें हम।

बहन तेरी की बन जाए लाल झंडी,
उसको दिल्ली की सैर करा दें हम।

●

सालीー छन्द पास ग्रा बोलिए
छन्द सामने टेरनी।
जीजे का बापू पेरना
जीजे की ग्रम्मा पेरनी॥

जीजा— छन्द पास ग्रा बोलिए
छन्द सामने मोर।
साली की सास शौकीननी
उठा ले गये चोर॥

●

गोरी दे अंगन फुल्ल जे खिड़ेया
खिड़ेया असल गुलाब,
गोदां हरियां होइयां

भाभो ननदै गल्लां लाइयां
बेइयै करन ह्साब,
गोदां हरियां होइयां

कृष्ण मुरारी जरमें भाभो
त्रैलोकी दे नाथ
गोदां हरियां होइयां

खुल्ली गे कैदखाने दे जन्दरे
बसुदेव चले न साथ,
गोदां हरियां होइयां ।

●

गोरी के आंगन फूल जो फूला
फूला असल गुलाब,
हुई गोदें हरी भरी।

भाभी ननद ने छेड़ी हैं बातें,
करती हैं बैठ हिसाब,
हुई गोदें हरी भरी।

कृष्ण मुरारी जन्मे भाभी
तीन लोक के नाथ
हुई गोदें हरी भरी

कारागार के खुल गये ताले,
वसुदेव चले हैं साथ
हुई गोदें हरी भरी।

●

श्रम गीत : नृत्य गीत

गरलोड्डी

ए ख्वाजेया पीरा होई सा
तेरे जोरै होई सा

हरामन कुल्लिए होई सा
जोर नईं लांदे होई सा

तेरे जोरै होई सा
पत्थर त्रोड़े होई सा

हरामी कुल्ली होई सा
हराम कमांदे होई सा

●

स्वाड़ी

मक्कें दी गोड्डिया—से—ऊ ग्रा
दभ्में दी गोड्डिया—से—ऊ ग्रा

लद्दे दी धारा—से—ऊ ग्रा
पौन फुहारां —से—ऊ ग्रा

चन्नै दिया हट्टिया—से—ऊ ग्रा
बिकी जन्दे गजरे—से—ऊ ग्रा

सीस ग्राले गजरे —से—ऊ ग्रा
लोक बड़े खचरे—से—ऊ ग्रा

डाडे तेरे नखरे—से—ऊ ग्रा
जिन्दू बड़े खतरे—से—ऊ ग्रा

●

मकान बनाते समय शहतीर आदि रखने का गीत

हे ख्वाजे पीर होई सा
तेरे बल से होई सा

हरामी कुली हैं होई सा
न जोर लगाते होई सा

तेरे बल से होई सा
पत्थर तोड़े होई सा

हरामी कुली हैं होई सा
हराम कमाते होई सा

●

कृषि सम्बन्धी गीत

मकई की गोड़ाई—से—ऊ—आ
धन की गोड़ाई—से—ऊ—आ

लट्टे की धार ओ—से—ऊ—आ
पड़ती फुहारें ओ—से—ऊ—आ

चांद की दुकान पे—से—ऊ—आ
बिकते हैं गजरे—से—ऊ—आ

शीशों वाले गजरे—से—ऊ—आ
लोग बहुत खचरे—से—ऊ—आ

वाह तेरे नखरे—से—ऊ—आ
जान, बड़े खतरे—से—ऊ—आ

●

बारां बज्जे ते पन्दरां मेण्ट बे
मिगी सूट स्याई दे रेडीमिण्ट बे
बालमां ओ स्हाड़ी तां नेंइयों निभदी ।

तुगी लोक तां आखदे मुन्शी जी
नईं घर मेज ते नईं घर कुरसी जी
बालमां ओ स्हाड़ी तां नेंइयों निभदी ।

तुगी लोक तां आखदे सेठ जी
नईं घर मंजा ते नईं घर खेस जी
बालमां ओ स्हाड़ी तां नेंइयों निभदी ।

तेरे दिलै नै दिल असें ला लेया
इनां लोकां ते भरम जे पा लेया
बालमां ओ स्हाड़ी तां नेंइयों निभदी ।

●

बारह बजके पंद्रह मिन्ट रे
मुझे सूट सिला दे रेडीमिण्ट रे
बालमां ओ हमारी नहीं निभती।

तुझे लोग कहें सब मुन्शी जी
घर मेज़ नहीं, न कुर्सी जी
बालमां ओ हमारी नहीं निभती।

तुझे लोग कहें सब सेठ जी
घर खाट नहीं, न खेस जी
बालमा ओ हमारी नहीं निभती।

तेरे दिल से दिल है लगा लिया
इन लोगों ने भेद जो पा लिया
बालमां ओ, हमारी नहीं निभती।

●

लोक गाथाएं

रुल्लैह दी कूह्ल

लक्ख रुपेइया राजै खर्च कीता
कूल्हा नइयों चढ़ेया चंदरा नीर।
सद्दिऐ पंडत राजा बेद पुछांदा
अड़ियो कियां नइयों चढ़दा नीर।।

मुक्ख जे छोटा राजा गल्ल जो बड़ी ऐ
अड़ेया मुक्खा नेइयों बोलेया जांदा।
जेठा जो पुत्तर राजा, जेठी बी नूंएं दा
बड्डा बो पुत्तर राजा, बड्डी बो नूंएं दा
कूह्ल तेरी मंगदी गलूर
जली बली जाएं बे रुल्लैह दिये कूह्ले।।

कूह्लै दे खल्ल राजा राखश बसदा
अड़ेया चढ़ना नइयों दिंदा बैरी नीर।
ओ रुढ़ी रुढ़ी जायां रुल्लैह मेरिये दिये कूह्ले।।

उठ्ठी के राजा रानी कोल जांदा
अड़िए कोदा हुन देचे बे गलूर ?
सिर जे रौंह्गन राजा पग्गां बथेरियां
अड़ेआ नूएं दा गै देयां तूं गलूर।
ओ जली बली जायां बे रुल्लैह मेरिए दिए कूह्ले।।

लिखी के चिट्ठियां राजा नूंएं गी भेजदा
नूंएं घर औयां बे जरूर
दिए दिया लोई रुल्लह बाचना लग्गिऐ
अड़ेयो अक्खीं दा ढलेया चंदरा नीर
ओ रुढ़ी रुढ़ी जायां बे रुल्लैह मेरिए दिए कूह्ले।।

होरनां दा लिखेया बथेरी बारी मोड़ेया
सौह्रे दा लिखेया कियां मोड़ां।
सद्दो चरैटेंगी, मेरा जोत्तरो बौंगला
सौह्रैं असैं जाना बे जरूर
ओ जली बली जायां रुल्लैह मेरिए दिए कूह्ले।।

रुल्ल की कूल

लाख रुपय्या राजे खर्च किया रे
कूल न आया पापी नीर।
पंडित बुलाए राजे वेद पुछाये
कूल न आया क्योंकर नीर ।।

छोटा मुख मेरा राजा, बात बड़ी है,
मुख से कही जाये ना
जेठे बेटे की राजा, जेठी बहू की
बड़े बेटे की राजा, बड़ी बहू की
मांगे यह बलियां हजूर
कुछ न रहे तेरा रुल्ल की ज़ालिम कूल ।।

कूल - तले राजा राक्षस रहे है
चढ़ने न दे बैरी नीर
कुछ न रहे तेरा रुल्ल की ज़ालिम कूल ।।

राजा उठा, आया रानी के पास रे
किस को करे बलिदान ?
सिर जो रहें राजा, बहुत पगड़ियां
दे दे बहू का ही दान
कुछ न रहे तेरा रुल्ल की ज़ालिम कूल ।।

चिठ्ठी लिखे राजा, भेजे बहू को
घर तू आना जरूर
दीपक की लौ में बांची रे पाती
नयनों ढरा बैरी नीर
कुछ न रहे तेरा ज़ालिम रुल्ल की कूल ।।

मोड़ीं बहुत बार औरों की चिट्ठियां
मोड़ी ससुर की न जाये
लाओ कहार मेरी डोली सजाओ
जाना हमें है जरूर ।
कुछ न रहे तेरा ज़ालिम रुल्ल की कूल ।

अज्ज निं जायां धिए मंगलबार
कल निं जायां कुड़िए ठंडड़ै बारैं
मोइए परसूं सौह्रे जायां तूं जरूर
ओ रुढ़ी रुढ़ी जायां रुल्लैह मेरिए दिए कूह्ले ।।

सज्जे जे पासैं तेरैं कागड़ा बोलेया
मोइए बौऐं फिंडियैं चंदरी परैंड़ी
जली बली जायां मेरिए रुल्लैह दिए कूह्ले ।।

× × ×

औंदिया रुल्लहा सौह्रैं गी सीस नोआया
लोका अक्खीं दा ढलेया चंदरा नीर
रुढ़ी रुढ़ी जायां रुल्लैह मेरिए दिए कूह्ले ।।

सिरैं दा साल्लू रुल्लहै ननानूं बल छंडेया
अड़िये रक्खी लैयां स्हाड़ी नशानी
गोदी दा बालक रुल्लैह सस्सू बल छंडेया
अड़िये रक्खी लैयां कैन्तै दी नशानी
ओ जली बली जायां रुल्लैह मेरिये दिए कूह्ले ।।

× × ×

लक्क बे लक्क सिगी दब्ब बटैंड़ेया
अड़ेया छात्ती बांदी रैंहना दे जरूर
गोदी दे बिच मेरा बालक न्याना
अड़ेया उस्सैं दुद्द पीना बे जरूर
ओ रुढ़ी रुढ़ी जायां मेरिए रुल्लैह दिए कूह्ले ।।

मूंडै तां मूंडैं मिक्की दब्ब बटैंड़ेया
अड़ेया मुख बांदा रैंहना दे जरूर
अड़ेया, बालुआ दा रेई गेया चा
भाइया, मुखैं मेरे कन्तै ने प्यार
जली बली जायां मेरिए रुल्लैह दिए कूह्ले ।।

बेटी न जा आज मंगलवार है
जाना न कल भी ठंडा वार है
जाना तू परसों जरूर।
कुछ न रहे तेरा ज़ालिम रुल्ल की कूल ।।

दाएं तुम्हारे बोले है कौआ
बाएं 'परैड़ी' बुरी
कुछ न रहे तेरा ज़ालिम रुल्ल की कूल ।।

× × ×

ससुर को आते ही सीस नवाआ
नयनों ढरा पापी नीर
कुछ न रहे तेरा ज़ालिम रुल्ल की कूल ।।

सालू तो सिर का दीन्हां ननद को
रख ले हमारी याद
गोदी का बालक सास को दीन्हां
कंत की मेरे याद
कुछ न रहे तेरा रुल्ल की ज़ालिम कूल ।।

× × ×

चिनना कमर तक मुझ को बटैड़
ओ, छाती बचाना जरूर
गोदी में मेरा बालक अंजाना
दूध पियेगा जरूर
कुछ न रहे तेरा रुल्ल की ज़ालिम कूल ।।

कंधे तलक चिन बेशक राज रे
रहने दे मुखड़ा जरूर
ओ बालू का रह गया चाव
ओ भाई, मुख से सजन को प्यार
कुछ न रहे तेरा रुल्ल की ज़ालिम कूल ।।

सिरै पर इट्‌ट नई रक्ख बटैड़ेया
अड़ेया चीर कैन्तै दिखना जरूर
ए नीं चीरै बिच सुट्टना सन्दूर
ओ जली बली जायां बे रुल्लैह दिए कूह्‌ले ।।

× × ×

सिरै पर इट्ट जदूं रखिए बटैड़ै
लोको चली पेआ चंदरा नीर
रुढ़ी रुढ़ी जायां रुल्लैह दिए कूह्‌ले ।।

औंदा जे कैंत घर पुच्छनां जे करदा
कुत्थैं गेइयै रुल्लहा नार
ओ जली बली जायां मेरिए रुल्लैह दिए कूह्‌ले ।।

गलै नै लाई राजा पुत्तरै गी आखदा
रुल्लहा दा दित्ता बे गलूर
तूं कैं घाबरेयां मेरेया पुत्तरा,
लक्ख ब्याह करानेआं जरूर
रुढ़ी रुढ़ी जायां रुल्लैह मेरिए दिए कूह्‌ले ।।

लेई तलोआर कैंत
रुल्लैं कोल पुज्जदा
ते आप मुंडी बड्डी लेई जरूर
जली बली जायां मेरिए रुल्लैह दिए कूह्‌ले ।।

●

सिर पे न ईंट रख, सुन बटैड़े !
साजन देखेंगे मांग जरूर
आके वे भरेंगे सिन्दूर
कुछ न रहे तेरा रुल्ल की ज़ालिम कूल ।।

× × ×

सिर पे रखो जब ईंट बटैड़े
लोगो बह चला पापी नीर
कुछ न रहे तेरा रुल्ल की ज़ालिम कूल ।।

आते ही घर में पूछा सजन ने—
रुल्ल कहां मेरी नार ?
कुछ न रहे तेरा रुल्ल की ज़ालिम कूल ।।

कंठ लगा राजा बेटे को कहता—
रुल्ल की दे दी भेंट
क्यों घबराए हो मेरे लाडले,
ब्याहेंगे लाखों बार
कुछ न रहे तेरा रुल्ल की ज़ालिम कूल ।।

रुल्ल के पास पहुंचा
ले तलवार वह
काटा गला मजबूर
कुछ न रहे तेरा रुल्ल की ज़ालिम कूल ।।

●

बार––ढोल बादशाह दी

निरबल कोट दा नर बादशाह, खेल चढ़े शकार।
अरशा उतरी होनी ए मिली पेई जंगल-जाड़ ॥

मिरगै दी स्त्री वनी गेयी, बनी गेयी सोहनी नार।
तीर कमान राजे नै कस्सेया, होनी करदी अग्गों जवाब ॥

तरकश्मान भोले बादशाह मेरी लेआं जान बचा।
अग्गों नरबल बोलेया, सुन रानी मेरी बात ॥

कुस राजे दियें बेटड़ी, कुस दी एं तूं नार।
नईं राजा दी अऊं बेटड़ी, नईं राजा दी नार ॥

होनी - होनी लोक आखदा, होनी ऐ मेरा नाम।
गास ऐन मेरे पिगले, धरती ऐन घर - बाह्‌र ॥

अग्गों नरबल बोलदा, सुन होनी मेरी बात ।
कुसी आइयैं बरतियै, खोल सुना तूं बात ॥

बरती आइयां राजे - परजेयां, दित्ते राज छड़ा।
अऊं बरतीआं पंजे पांडवें, अवस्था कट्टी शहर बराट ॥

अऊं बरतीआं दस रावना, लैंका कीती खाक श्याह।
फिरी बरती राम चन्द्रैं, चौदें बरें दा बनबास ॥

अऊं बरतीआं हरिचंद गी, इट्टाँ टोए बिच बजार।
अऊं बरती गोपीचंद गी महलें रौंह्‌दी सौ-सट्‌ठ नार।

अऊं बरती पूर्ण यती गी लूना छोड़ेया मरवाई।
अऊं बरती राजे भोज गी, रन्ना कीते दा ख्वार ॥

अऊं बरती राजे भरतरी, महलें रोंदी पिंगला नार।
अऊं बरतीआं लक्खन यती गी, टिल्ले छोड़ेया हा चाढ़।

अऊं बरती तारा लोचनी, झोकै माछिएं दा भट्ट।
अऊं बरती रांझे जट्ट गी, टिल्लै जाई कन्न फड़वा ॥

'बार' ढोल बादशाह को

निर्बल कोट का बादशाह करने चला शिकार।
नभ से 'होनी' उतर कर बैठी विजन-उजाड़॥

बन कर सुन्दर मृगी वह, बन गयी सुन्दर नार।
कसा बाण लख भूप का नारी उठी पुकार॥

'तरकश - धारी बादशाह, मेरी जान बचा।
राजा बोला—सुन्दरी, सुन मैं कहता क्या॥

'बेटी तू किस भूप की, किस राजा की नार।'
'ना बेटी मैं भूप की, ना राजा की नार॥'

होनी कहते लोग हैं, होनी मेरा नाम।
नभ में मेरे मायके, धरती है दर - धाम॥

होनी से राजा कहे—सुन तू मेरी बात।
किस पर तेरा कोप है, कह दे सब विस्तार॥

प्रजा बचे न भूप ही, दूं मैं राज छुड़ाय।
पांडव पांचों भी रहे देस विराट पराय॥

कुपित हुई लंकेश पर, कर दी लंका नास।
चौदह वर्षों तक किये रामचन्द्र बनवास॥

हरिशचन्द्र ढोते फिरे ईंटें बीच - बजार।
गोपीचंद की रानियां रोईं जारो - जार॥

लूना ने यति पूर्ण को मरवाया, थी चाल।
सुन्दरियों ने भोज का जीना किया मुहाल॥

चले छोड़ घर भरतरी, रही पिंगला नार।
होनी कारण लक्ष्मण छोड़ गये घर-बार॥

तारालोचन विधि-विवश बेचे मछली-मांस।
रांझे ने जा 'पीठ' पर फड़वाए थे कान॥

अऊं बरती मिरजे शाह गी, किलनी रे सब हत्थयार।
इतने गी आइयां बरतीऐ, तुगी बरतां केड़ै बार।।

मी बरतियै के लैना ई, माया दे भरे भण्डार।
घोड़े बद्दे बिच तबेले दै, बादशाही बे शुमार।।

जिस बेल्लै होनी बरती, अग्गीं लगदियां महलें आन।
फौजां लश्कर नस्सी गे, पेई गे अपनी अपनी राह।।

नस्सी चलेया नरबल बादशाह, कोमल देस दे बिच जा।
'कोमल' बादशाह दै घर जाइयै, ढोल जरमेया जेदे आन।।

सत्तें दिनें दा ढोल होई पेआ, पंजें दिने दी महरबान।
थालै बिच ब्याही ऐ, मोती पे तमोल।।

ब्याही ऐ बादशाह टुरी पेआ, आई गेआ निरबल कोट।
बारें बरें दी महरबान होइयै जिन्नै लैत्ती होश संभाल।।

सामें खेडन जंदी ऐ करिए हार शिंगार।
उड़दे पैंछी मूंदी ऐ, डिगी पे फंगें-भार।।

जलै च मोही लेइयां मच्छियां मोही ले बुल्लन ते संसार।
पंद चलदे मोही ले बानियें, जिन्दे टुट्टे बन्ज बपार।।

काठ कुहाड़ा रब्बा बगेया, बृक्षें गी लग्गे बजोग।
अपनी आई कटोई जानगे, इनें पैंछिएं दा के होग।।

जित्थैं महरबान पैर धरै, छापे लग्गी संदूरै दे जान।
अग्गों सठ्ठ सहेलियां बोलियां, सुन महरबान मेरी बात।।

जे ब्याहीएं, खेड ब्याहिए, जे कुंवारी एं कुंवारिए जा।
सुनियां गल्लां महरबान, जेड़ी छम छम रोदन लाग।।

दौड़ा मारी टुरी पेई महरबान, कोल माता दै आन।
सच्च दस्स हां माता मेरिये, जे ब्याहीआं जां कुआर।।

मिर्जा कुछ ना कर सका, टंगे रहे हथियार।
इतने भूपों-बाद अब, तुझे छलूं किस वार' ।।

क्या कर लोगी, माया से, भरे सभी भंडार।
घोड़े हैं घुड़साल में, वैभव अपरंपार ।।

व्यापी होनी आय के महलों लागी आग।
चले गये निज राह सब, गयी फौज सब भाग ।।

भागा नरवर बादशाह, पहुंचा कोमल देश।
जन्मा बेटा ढोल ज्यों आया शुभ सदेश ।।

पांच दिवस की महर थी, सात दिवस का ढोल।
थाली में रख ब्याह हुआ, मोती मिले तंबोल ।।

लौटा निर्बल कोट नृप, रहा बीतता काल।
होश संभाली महर ने, लगा बारहवां साल ।।

सावन में वह खेलने जाए कर शृंगार।
उड़ते पक्षी मुग्ध हो, गिरे पंख के भार ।।

मुग्ध हुई जल मछलियां, मुग्ध हुआ संसार।
पंथी - बनिये मुग्ध हो, तज बैठे व्यापार ।।

काठ लगी कुल्हाड़ियां, विटप विरह में लीन।
कट जाएंगे पेड़, क्या करें पखेरू दीन ।।

धरे जहां पर पैर वह, बिछे वहां सिन्दूर।
बोलीं साठ सहेलियां, सुन री प्यारी हूर ।।

ब्याही या कौमारिका, चुन ले अपनी पांत।
महरबान के नयन तब भरे नीर के साथ ।।

भागी पहुँची आय के, अपनी मां के पास।
मैं हूँ ब्याही या नहीं, कहो बिना उपहास ।।

अग्गों माता बोलियैं, सुन महरबान मेरी बात।
पंजें दिनें दी ढोल ब्याही गेया, मुड़ी निं आया देस।।

सुत्ते पे सुखना आइया, ढोल रेआ रानी दै कोल।
रातीं सज्जने कोल हे दिन चढ़दे मिले बजोग।।

सुखनेया भैड़ेया सुलतानेआं, उत्तम तेरी जात।
सौ बरें दे बिछड़, आई मलानां ए रात।।

लेई कान्नी चिट्ठियां लिखदियैं, बोल सज्जन के होग।
लिखी चिट्ठी रानी भेजदी, गल सुन्ने तोते दै पाई।।

मारी डोआरी तोता टुरी पेआ, निरबल कोट गी जाई।
तखत बैठा ढोल बादशाह, चिट्ठी सुटदा तोता जाई।।

बाची चिट्ठी ढोल बादशाह, रानी महरबान दी आई।
जे तूं औना ढोली अज्ज आ, कल होनी बिरद बरेस।।

सदा निं ढोला सर भरे, सदा नईं ओ बाल-बरेस।
सदा निं हुसन जवानियां, सदा नईं ओ काले केस।।

× × ×

दक्खन उट्ठी राजा बदली, बरसी ऐ मारू देस।
होंदेयां जींदेयां हाकमां, सुक्के रौह्न जिनां दे खेत।।

सौन म्हीने देया बदला, कैं लाइयां जालमां घोरां।
डुल्ले ने ढोला मोती, चुन ले ने भैड़ेयां मोरां।।

हैंसे दियां ढोला जगहां, मल्ली लेइयां भैढ़ेयां कामां।
हैंस मरदे ढोला धुप्पा, कां मारदे ठंडियां छामां।।

मरी जंदे न ढोलिया भाई, भज्जी जंदियां जालमां बाह्मां।
निक्के होंदे दियां ढोलड़ा, निज मरदियां मामां।।

फटे निं ढोला कुरते, गले कन्नै लग्गियां बाह्मां।
हत्थें दे ढोला टुकड़े, खोई ले न ढोलिया कामां।।

पांच दिवस की तू रही, ब्याह गया जब ढोल।
कभी न आया लौट कर, सुन तू सच्चे बोल ।।

सोए देखा स्वप्न में, साजन से संयोग।
आंख खुली, सब लुट गया, फिर से हुआ वियोग ।।

सपना कैसी चीज है, उत्तम इसकी जात।
बिछड़े प्रिय सौ वर्ष के, आ मिलते हैं रात ।।

लिखे कलम ले पातियां, खारे आंसू घोल।
बांधी तोते के गले—'क्या होगा प्रिय बोल' ।।

ले पाती वह उड़ चला, पहुँचा निर्बल कोट।
शुक ने पाती फेंक दी, सिंहासन पर लोट ।।

बांची पाती ढोल ने, छोड़ दिये सब काज।
कल बूढ़े हो जायंगे, आजा साजन आज ।।

सदा न रहता बालपन, भरे न रहते ताल।
सदा न हुस्न जवानियां, सदा न काले बाल ।।

× × ×

दक्षिण के बादल घिरे, सरसी मरु की रेत।
हाकिम रहते रह गये, सूखे मेरे खेत ।।

सावन के हे मेघ तू, बरसे क्यों घनघोर।
मोती बरसे साजना, चुन कर ले गये मोर ।।

राजहंस के नीड़ पर, बैठे आ कर काग।
हंस मरे जा धूप में, ठंडी छाया काग ।।

सजना जो भाई मरे, टूटे नर की बांह।
मरे न छोटी उम्र में, यहां किसी की मां ।।

कुरते फट गये साजना, जुड़े गले से हाथ।
बचे हाथ में चीथड़े, काग ले गये साथ ।।

ढाला नईं गरीब गी मारियें, बुरी गरीब दी ग्राह् ।
मोए बकरे दे खल्ल सें, लौह भस्म हो जा ।।

× × ×

होई सवार ढोल टुरी पेया, ग्राया महरबान दे पास ।
कड्ढी चौंपड़ रानी खेडदी, खेड्डै ढोल दै नाल ।।

बेपरवाइयां रब्बा तेरियां, बिछड़े छोड़ें मलाई ।
जुगें दा बिच्छड़ेया ढोल बी, मिलया महरबान गी ग्राई ।।

बावा भैंड़ दी कारक

भलें सुम्हूरन जन्म बावे दा, नारी मंगल गाई ।
गहरी नागनी, कपूरी नागनी, जुड़ ब्रिद्धमाता लाई ।।

गहरी नागनी नैं भैड़ जरमेग्रां, कपूरी ने जरमेग्रा क्हाई ।
माता नैबला सुरगल जरमेग्रां, लट-लट जोत सुहाई ।।

सद्दी पंडत म्हूरत पुच्छेग्रा, दित्ता बेद पुछाई ।
बेदें केड़े पतरे बोलदे, पन्तै सच्च गलाई ।।

जम्मूग्रां दा टिक्का भैड़ा गी देना, ग्रन्दर खनूरै क्हाई ।
ठेड़ा दा टिक्का सुरगल देना, करड़ा राज कमाई ।।

ग्रज निक्का, कल होग स्याना, दिन-दिन जोत स्वाई ।
वधी वरेसा बधेग्रा बावा, सबल जुग्रानी ग्राई ।।

हुक्म कीता राजै बासकै दित्ती कुप्पी गडाई ।
नौकर भेजी भट्ट राजे नै, पुत्तर लैते सदाई ।।

बाई पुत्तर सदाए राजै बासक, दित्ती ऐ मण्डी लाई ।
जेड़ा कुप्पी फुण्डी ग्रानै, राज तिलक देङ्ग उसी जाई ।।

नहीं दीन को मारिए, बुरी दीन की हाय।
मृत बकरे की खाल से, लौह भस्म हो जाय ।।

× × ×

हो सवार फिर बादशाह, पहुँचा रानी - पास ;
चौरस रानी खेलती, अपने साजन - साथ ।।

तेरी बेपरवाहियां, बिछुड़े दिए मिलाय।
युग से बिछुड़ा ढोल फिर, मिला महर से आय ।।

बावा भैड़ की कारक

भले महूरत जन्मा बावा नारी मंगल गाई।
गहरी और कपूरी नागिन जुड़ विधिमाता आई ।।

गहरी के घर भैड़, कपूरी के जन्मा रे क्हाई।
सुरगल बेटा नेवला के, सुन्दर जोत सुहाई ।।

पंडित से पूछे ग्रह राजा, लीन्हे वेद पुछाई।
वेदों के पन्ने पढ़ पंडित सच्ची बात बताई ।।

जम्मू-राजा बने भैड़, अखनूर बनेगा क्हाई।
ठेड़े टीका सुरगल पाए राज करे दृढ़ताई ।।

आज अबुध कल हुआ सयाना, दिन दिन जोत सवाई।
बढ़ी उमरिया बीता बचपन, सबल जवानी आई ।।

हुक्म दिया राजा वासुकि ने कुप्पी इक गढ़वाई।
नौकर भेजा, बेटे सारे लीन्हे पास बुलाई ।।

सुत आए बाईस, लगी रे मंडी बड़ी सुहाई।
जो कुप्पी को बेधे पाए राजतिलक सुखदाई ।।

खट्टर घोड़ा भैंड़े गी मिलेग्रा, बडै मदानै जाई।
कुप्पी फुण्डी राजे भैड़े, बिच जम्मूग्रां दे टिक्का पाई।।

जम्मूग्रा दा टिक्का भैड़े गी मिलेग्रा, ग्रन्दर खनूरै व्हाई।
हुक्म कीता राजै बासकै देग्रो मिगी जल पलयाई।।

बाई पुत्तर राजै बासके दे, टुरी पे तेगां ठाई।
मारी मजलां राजा भैंड़, जेड़ा बास कुण्डै गी जाई।।

तप करियै राजे भैंड़ै नै, गदा-प्हाड़ै गी लाई।
ग्रग्गैं - ग्रग्गैं भैड़, पिच्छैं तौ चलदी लड़ङ्गन* चक बडाई।।

ग्रग्गैं - ग्रग्गैं भैंड़ देवता चलदा पिच्छैं तौ नमानी।
उप्पर जम्मूग्रां दै 'तौ' बगै पल्याई पिता गी पानी।।

लड़ङ्गन चक बडाई, देवा! दित्ती ऐ डबर बनाई।
सौ-सौ सीस देऐ बावे गी ए धरती तरयाई।।

भरी गड़वा जला दे केड़ा, पिता गी शनान कराई।
सीस पिता दी पाइयै बावै सौ-सौ सगन मनाई।।

सारें कोला निक्का राजा भैड़, राज दित्ता भैड़े गी जाई।
हुक्म कीता इक्कियें भ्राएं, लोहे दा पिन्जरा बनाई।।

हीरे-जवाहर, मनियां-मोती, पिन्जरे दी शोभा नयारी।
रलियै इक्की सलाह् करदे, ग्रस छोड़चै भैड़ा गी मारी।।

पिन्जरा दिक्खन बड़ेग्रा भैड़ जिनै छोड़े जन्दरे लाई।
धक्का मारियै सुट्टेग्रा पिन्जरा विच चनां दै जाई।।

किलक मारी राजे भैड़ै बिच पताल लोक दै जाई।
पताल लोक दा 'कच्छ' राजा, पिन्जरा दिक्खया ग्राई।।

भन्नी जन्दरा कच्छ राजे नैं, भैड़ कड्डेग्रा बाह्र ग्राई।
लेई भैड़े गी चलेग्रा राजा जिन्न लैता मण्डी बुलाई।।

---

*छन्द भंग न हो, इसलिए ग्रनुवाद में छोड़ दिया गया है।

अड़ियल घोड़े बैठ भैड़ मैदां में आया भाई।
कुप्पी बेधी, जम्मू की गद्दी तब उसने पाई।।

जम्मू राजा भैड़ हुआ, अखनूर हुआ रे कहाई।
मुझे पिलाओ जल, राजा ने आज्ञा यह सुनवाई।।

बाइस बेटे तेगें ताने वास कुण्ड को जाई।
वास कुण्ड पर भैड़ मंज़िलें तय कर पहुंचा भाई।।

भड़ देव ने तप करके पर्वत को गदा जमाई।
आगे भैड़, तवी पीछे थी, लांघे चक्क बड़ाई।।

आगे-आगे भैड़, तवी पीछे - पीछे हत - मानी।
कलकल जम्मू - पास, पिता को भैड़ पिलाए पानी।।

लड़ङन चक्क बडाई देवता ! गहरी 'डबर' बनाई।
बावे को आशीष दे रही प्यासी धरती भाई।।

पिता भैड़ ने नहलाए, लोटे से धार बहाई।
सौ - सौ सगन मनाए जब, आशीष पिता से पाई।।

सब से छोटा भैड़ पिता से गद्दी उसने पाई।
लौह - पिंजरा बनवाया मिलकर इक्कीसों भाई।।

जड़े जवाहर मानिक मोती हीरे शोभा न्यारी।
मिल इक्कीस सलाह कर रहे मरे भैड़ दुखकारी।।

घुसा पिंजरे भैड़, देखने, ताले दिये लगाई।
धक्का दिया चिनाब नदी में फेंका, की कुटिलाई।।

जा पहुंचा पाताल-लोक में, मारी जो किलकारी।
आके देखा 'कच्छ' राज ने बंद पिंजरा भारी।।

तोड़े ताले कच्छ राज ने भैड़ निकाला आई।
संग भैड़ को लिए चला फिर मंडी तुरंत बुलाई।।

वारां बरे गुजरी गे उसी पताल लोकें 'च जाईं।
चरासी पुत्तर पोतरे राजे नै ले मण्डी सदाई ।।

सारें गी राजा पुच्छना करदा, भैड़ नजर नईं आई।
डरदे मारे यक्ष बजीरै, छोड़ेआ झूठ गलाई ।।

राजा भैड़ शकार गेआदा मुड़ियै नजर न आई।
लिखी परवाना बासक राजै, वजीरै दै हत्थ फड़ाई ।।

किलक मारी यक्ष बजीरै बिच पताल लोक दै जाई।
पताल पुरी दे लोकें गी पुच्छदा भैड़ नजर नि आई ।।

अग्गी दा लोरा निकलै बिच टापू, ए नागै दी नशानी।
तुपदा तुपदा यक्ष बजीर, पुज्जा मण्डी 'कच्छै' दी जानी ।।

मण्डी बैठे दा भैड़ देवता, जिन जयदेवा जा गलाई।
लेई परव ना राजे बासकै केड़ा भैड़ै दै हत्थ फड़ाई ।।

पढ़ी परवाना राजा भैड़ै नै मना गी दुआसी पाई।
हुक्म कीता राजै कच्छै नै बेह्ड़ै बेद गडाई ।।

बेह्ड़ै बेद गडाई राजे नै दित्ती ऐ पुत्तरी ब्याई।
मच्छ दाज दित्ते 'राजे कच्छै' समुंदरै दी लुकाई ।।

डोले पाई लेई 'रानी सन्दूरी', 'अटका' डेरा लाई।
बक्कर - मास कढ़ाइयै तलदा, भत्त रसोइयै बनाई ।।

'अटका-अटका' चलेआ राजा, 'चन्दरचनावां' आई।
छोड़ी 'चन्दर-चनावां' राजा तवी च पुज्जा जाई ।।

पीर-खोह्‌ा आई खादी रसोई, जिनै डबरी डेरा लाई।
हुक्म कीता राजा भड़ै नै देने महल बनाई ।।

विच डबरी दै महल बनदे मोतियैं जड़त-जड़ाई।
सुन्ने दे महल राजा दे बनदे, लालें दी रुशनाई ।।

दूरा-दूरा दा संगतां औन्दियां जै-जै कार बुलाई।
पुत्तरें दे लैन्दा बकरे, लैन्दा क्हार मनाई ।।

बारह बरस गुज़रे पाताल में सुध ना कोई पाई।
राजे पुत्र-पौत्र चौरासी मंडी लिये बुलाई।।

सब से राजा पूछे—बोलो भैड़ नज़र नहिं आई।
डर से मन्त्री यक्ष एकदम झूठी बात बनाई।।

राजा भैड़ शिकार गया था, लौट न दिया दिखाई।
लिख के चिट्ठी वासुकि ने मंत्री के हाथ पठाई।।

यक्ष पहुंच पाताल लोक में किलक उठा तब भाई।
लोगों से वह फिरे पूछता भैड़ नज़र नहिं आई।।

लंपट आग की निकले टापू में यह नाग निशानी।
खोजी यक्ष वज़ीर कच्छ राजा की मंडी जानी।।

मंडी बैठा भैड़, कही 'जयदेव' यक्ष ने जाई।
पाती राजा वासुकि की फिर भैड़ हाथ पकड़ाई।।

पढ़ के पाती भैड़ देवता, हृदय उदासी पाई।
हुक्म दिया तब कच्छ राज, आंगन में वेदि बनाई।।

आंगन वेदि बना राजे ने बेटी अपनी ब्याही।
मत्स्य मिले दायज में, सागर की सारी लोकाई।।

डोले में रानी सिन्दूरी लिये, अटक ठहराई।
मांस तला जाता बकरे का, भात संग बनवाई।।

अटक नदी से चन्द्रभाग में राजा पहुँचा आई।
चन्द्रभाग को छोड़ तवी में राजा आया भाई।।

पीरखोह आ भोजन जीमा, डेरा 'डबर' बनाई।
हुक्म किया तब भैड़ देव ने सुन्दर महल बनाई।।

बीच नदी के महल, मोतियों की कीगयी जड़ाई।
महल बने सोने के, नृप के, लालों की रोशनाई।।

दूर दूर से संगत आए जय-जय, कार बुलाई।
पुत्र जन्म पर बकरों की बलि लेता वहार मनाई।।

सांचे बचन तेरे राजा, अमरत कथा सुनाई।
जे कोई तेरी कथा गी सुनगी, देह-सुरगे गी जाई।
जे कोई तेरियां रखगी 'कारां' छोड़ै बेल बधाई।।

औतरें घर पुत्तर दिन्दा, निरसारैं गी सारी।
जे कोई तेरियां कारां रखै आप तरै, कुल तारी।।

देस सराह्ना

जन्हेआ सुभामा देस डोगरा,
न्हेआ देस निं दिक्खना कोई होर जी।
साड़ै बाह्वें कालका बैठी ऐ,
कोल महामाया देवी दा भौन जी।
साढ़ै सुकराला, मल्ल देवी बैठी ऐ,
आदकुंवारी नै मल्ली ऐ धार जी।
माता बैष्णो दे किंगरे लब्दे,
जेड़ी बैठी ऐ गुफा च जा जी।
तेरै चली चली संगतां औन्दियां,
भगत बोलन जै - जैकार जी।
साढ़ै अम्बका - चण्डका गी पूजदे,
चौंडा देवी गी लैन मना जी।
साढ़ै भद्रकाली गी पूजदे,
महा लक्खमी लैन मना जी।
धर्मी ऐ देस साढ़ा डोगरा,
जित्थैं सारे देवी-देवतें दा बास जी।
बिच गुफा दै बैष्नो बैठी ऐ,
कोल बुआ बावे दा ग्हार जी।
बिच चनां दै 'व्हाई' देवता,
द्वीप जम्मूआं बावा भैड़ जी।

सांचे वचन तिहारे राजा, अमृत कथा सुनाई।
देह स्वर्ग को जाय सुनेगा कथा, तुम्हारी जो भी।
जो भी राखे तेरी 'कारें' उसकी बेल बढ़ाई।।

पुत्र हीन को बेटे, रंकों को संपत्ति सारी।
आप तरे, कुलतारे 'कारें' जो भी राखे तेरी।।

देश सुहाना

देश अपना सुहाना डोगरा
ऐसा देश नहीं कोई और जी।

बैठी 'बाह्वे' हमारे कालिका
महामाया का पास ही भवन जी।

सुकराला और मल्ल यहां देवियां
यहां आदिकुमारी की 'धार' जी।

माता वैष्णो की दीख रही चोटियां
देवी बैठी गुफा के बीच जी।

आएं चल के संगतें दूर से
भक्त करते सभी जय कार जी।

पूजें अंबिका, यहां चंडिका
चौंडा देवी को लेते मना जी।

भद्रकाली यहां सब पूजते
महालक्ष्मी को लेते मना जी।

धर्मी देश है अपना डोगरा
देव-देवियों का निवास जी।

गुफा बीच विराजे वैष्णो
पास 'बुआ बावे' का स्थान जी।

चन्द्रभागा में 'क्हाई' देवता
जम्मू द्वीप में बावा भैड़ जी।

तविया बावा भेंड़ गी पूजदे,
गोइयै आटा मच्छियें गी पान जी।

साढ़ै सरुईंसर, मानसर पूजदे,
'तखत कल्हन' लैन मना जी।

साढ़ै बावे 'सुरगलै' गी पूजदे,
लोक बरमियें दुलस्सियां पान जी।

साढ़ै नाग पैञ्चमी पूजदे,
सारे नागें गी लैन मना जी।

साढ़ै नारसिंह, कालीवीर पूजदे,
बावा जित्तो गी लैन मना जी।

बावा 'मेही मल्ल' 'रणुआ' भौतो पूजदे,
बावा जित्तो गी लैन मना जी।

खल्ला देसा संगतां औन्दियां,
गहरे जातरें दे ढोल वजान जी।

बिच 'झिड़ी' दै बूआ - बावा पूजदे,
लोक आई - आई सीस नोआन जी।

साढ़ै सैहज नाथ, बिरपा नाथ पूजदे,
'सिद्ध गोरिये' गी लैन मना जी।

'रतनपाल सम्याल' साढ़ै पूजदे,
भैरो नाथै गी लैन मना जी।

साढ़ै अर्जुन, महादेव पूजदे,
'भीम' देवते गी लैन मना जी।

धर्मी ऐ देस साढ़ा डोगरा,
जित्थैं इन्ने देवी-देवतें दा बास जी,

जेड़े इनें देवी देवतें गी पूजदे,
उनेंगी कदें नि औंदियै हार जी।

साढ़ै शिव भोले गी पूजदे,
अमर नाथ, गौरी कुण्ड लैन मना जी।

पूजें भेड़ तवी के बीच जी,
आटा डालें मछलियों को गूंथ जी।

सरूईंसर व मानसर पूजते,
'तख्त कल्हन' लेवें मना जी।

बावा सुरगल यहां पर पूजते,
डालें बांबी में दूध-लस्सी लोग जी।

यहां नाग - पंचमी पूजते,
सभी नागों को लेते मना जी।

यहां नरसिंह, कालीवीर पूजते,
बावा जित्तो भी लेते मना जी,

बावा महीमल्ल, रणुआ, भौतो पूजते,
बावा जित्तो को लेते मना जी।

देस निचले से आएं भक्त जन
गहरे यात्रा के ढोल बजायें जी।

बुआ, बावा झिड़ी में पूजते,
लोग आएं नवाएं सीस जी।

यहां नाथ—सहज बिरपा पूजते,
सिद्धगोरिया लेते मना जी।

रतनपाल सम्याल यहां पूजते,
भैरव नाथ को लेते मना जी।

यहां अर्जुन, महादेव पूजते,
भीम देव को लेते मना जी।

धर्मी देश डोगरा है जहां
इतने देवी-देवों का वास जी।

जो इन देवी-देवों को पूजते,
उनकी होती कभी ना हार जी।

भोले शंकर, अमर नाथ भी यहां
लोग पूजें यहां गौरी कुण्ड जी।

आई-आई बिच देवका दे न्हौंदे,
अपनी देहीआ दे पाप चुकान जी ।

धर्मी ऐ देस साढ़ा डोगरा,
न्हेआ देस नि दिक्खना होर जी ।

साढ़ें चीड़ां - दयार न छूंकदे,
गीत गान्दे धारें पर लोक जी ।

नाख, त्रेलां, बेहियां पुजदियां,
इनें स्यूयें दी मौज ब्हार जी ।

गलास बखारा साढ़ै पकदे,
बग्गूगोछें दी मौज ब्हार जी ।

जिन्हेआ सुभामां देस डोगरा,
न्हेआ देस नि दिक्खनां कोई होर जी ।

धर्मी ऐ देस साढ़ा डोगरा,
जित्थैं मेवे दी मौज ब्हार जी ।

साढ़ै चाननी, गुलाब चम्बा खिड़ेआ,
गुट्टे मोतिये दी मौज ब्हार जी ।

साढ़ें बागैं कोयलां बोलियां,
पालां पान्दे जाड़ें बिच मोर जी ।

धर्मी ऐ देस साढ़ा डोगरा,
न्हेआ देस नि दिक्खना कोई होर जी ।

बड़ा शैल लबास साढ़ा डोगरा,
मिट्ठी लगदी दिलै गी टोर जी ।

झिक्का कोट, घटन्ना साढ़ै फबदा,
पग्गै-साफे दी मौज ब्हार जी ।

शेरैं जन्हे न सूरमे डोगरे,
जेड़े दिलै दा नईं कमजोर जी ।

जन्हेआ सुभामां साढ़ा देस डोगरा,
न्हेआ देस नि दिक्खना कोई होर जी ।

लोग देविका में नहायें जी
देह अपनी के पाप चुकायें जी।

धर्मी देश हमारा डोगरा
देश ऐसा न दीखे और जी।

देवदार व चीढ़ यहां सूंकते
गीत गाते पहाड़ों पे लोग जी।

फलती त्रेल, बही, नाशपातियां
यहां सेबों की मौज बहार जी।

पकते आलूबुखारे, गिलास भी
बग्गूगोशों की मौज बहार जी।

देश सुन्दर है जैसा डोगरा
देश ऐसा न दीखे और जी।

धर्मी देस हमारा डोगरा
जहां मेवों की मौज बहार जी।

खिलता चम्बा, गुलाब, फैले. चांदनी
गुट्टे, मोतिए की मौज बहार जी।

यहां बागों में कुहकें कोयलें
नाच नाचें विजन में मोर जी।

धर्मी देस हमारा डोगरा
ऐसा देस न दीखे और जी।

बड़ा सुन्दर अपना लिबास जी
मीठी लगती हृदय को चाल जी।

कोट लम्बा घुटन्ना सोहता
पाग साफे की मौज बहार जी।

शेर जैसे रे सूरमे डोगरे
जो दिल से नहीं कमजोर जी।

देस सुन्दर है जितना डोगरा
देस ऐसा न दीखे और जी।

परिशिष्ट

शब्द=अर्थ	शब्द=अर्थ	पृष्ठ
पड़ी=लड़की का नाम	नाजकू=लड़की का नाम, नाज़ुक	७
त्रिम्ब=तृण, अत्यंत बारीक सलाई या कांटा		११
खरैनी=फूल विशेष,	धम्मन=पेड़ विशेष	२७
तारू=तैराक ६७	वारी=बलि जाऊं	४१
मंगलोट्रुआ=नाम विशेष—मंगलोट्रू का संबोधन रूप		४३
सुसरू=लकड़ी में सुराख करके रहने वाला घुन जैसा कीड़ा		५१
गूंदां=स्त्री का नाम ५३	गूंदल=स्थान विशेष	५३
नाजो=स्त्री का नाम, नाज़-नखरे वाली		५५
ढोल=साजन ७५	बालू=नाक का आभूषण	७७
गुपकारी=गुप अंधेरा हो जाना ८	माही=साजन	८७
टेरनी=सूत लपेटने का चौखटा, आंटी बनाने का यंत्र		१११
पेरनी=एक घुमक्कड़ खानाबदोश जाति		१११
शौकीननी=शौकीन का स्त्रीलिंग		१११
रेडीमिट=रेडीमेड, ११९	रुल्ल=स्त्री का नाम	१२३
परैड़ी=पशु विशेष		१२५
बटैड़ा=पत्थरों की चिनाई करने वाला, राज		१२५

गहरी, कपूरी, नेवला=नाग रानियों के नाम, नागराज वासुकि की पत्नियां। १३५ भैड़, क्हाई, सुरगल=वासुकि के पुत्र। १३५

अखनूर, ठेड़ा=स्थान विशेष १३५, मंडी=सभा १३५, वास कुण्ड=वासुकि कुण्ड—भद्रवाह से ऊपर कैलाशपर्वत में स्थित कुण्ड। १३७

लोकाई=लोक, संसार १३९ चन्द्रभागा=चनाब नदी १३९

पीरखोह=जम्मू नगर के समीप एक गुफा जहां शिव मन्दिर है १३९

डब्बर=नदी में वह बड़ा गड्ढा जहां जल बहुत गहरा होता है १३९

कार=कार्य, नियम १३९

वाह्वा='वाहु' नामक दुर्ग १४१ बावा=बावा जित्तो १४१

बुआ=बुआ कौड़ी—बावा जित्तो की बेटी १४१ त्रेल=छोटे खट्टे सेब १४५ वही=सेब जैसा एक फल १४५ गिलास=एक फल, चैरी १४५ बग्गू गोशा=नाशपाती जैसा एक फल। १४५

जम्मू - कश्मीर ललितकला, संस्कृति तथा साहित्य अकादमी
जम्मू • श्रीनगर • लेह